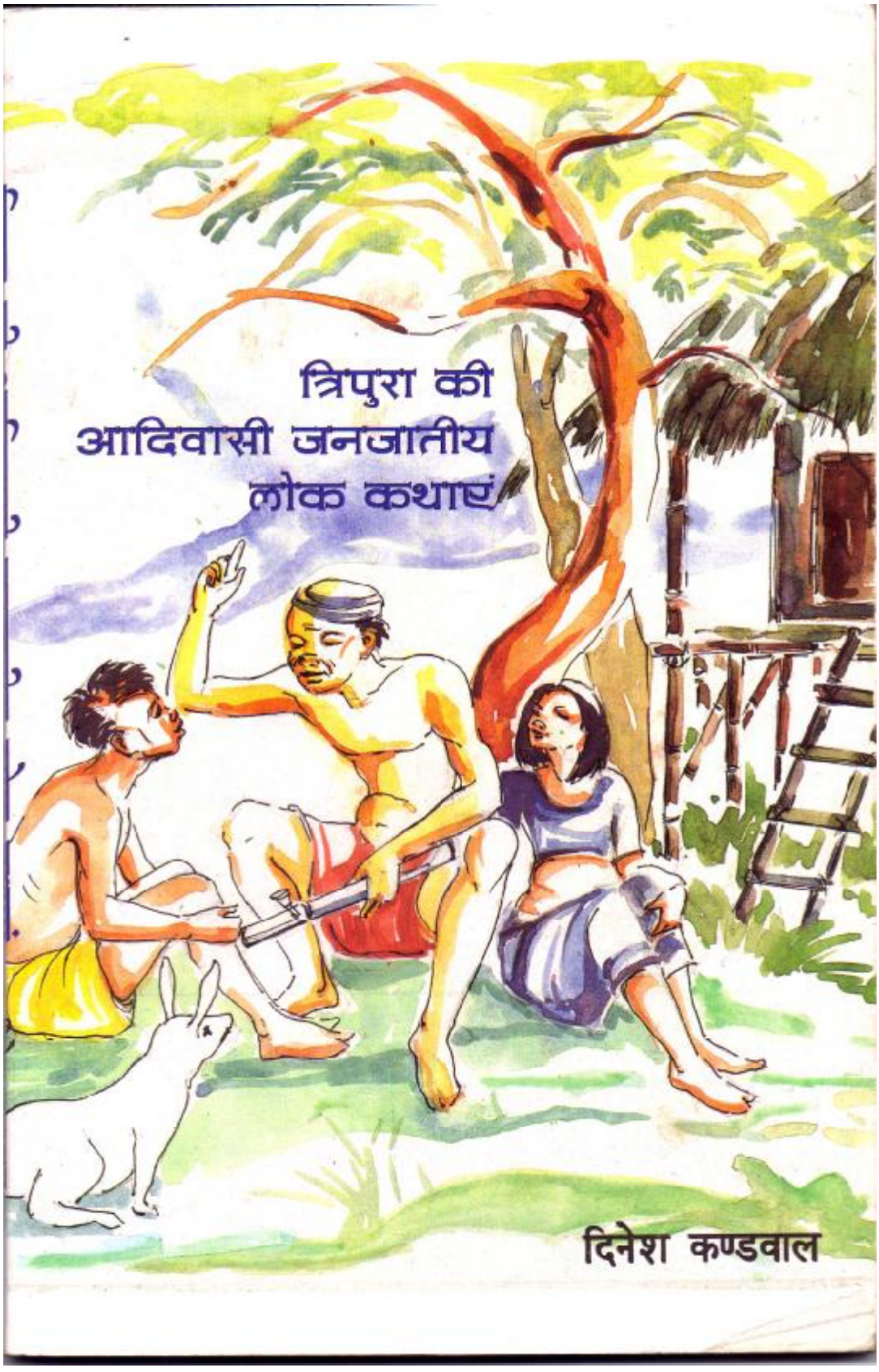
त्रिपुरा की
आदिवासी जनजातीय
लोक कथाएं
दिनेश कण्डवाल

त्रिपुरा की आदिवासी जनजातीय लोक कथाएं

दिनेश कण्डवाल

त्रिपुरा राज्य आदिवासी जनजाति सांस्कृतिक
अनुसंधान संस्थान एवम् संग्रहालय द्वारा प्रकाशित

© दिनेश कण्डवाल

प्रकाशक : त्रिपुरा राज्य आदिवासी जनजाति सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान एवम् संग्रहालय,
गोरखा बस्ती, अगरतला - 799 001

प्रथम संस्करण : 1996

रेखांकन : अमरजीत

मुद्रक : मेगा कम्प्यूटर सेन्टर,
अगरतला- 799 001
फोन : (0381) 22-8185

मूल्य : पचास रुपये

Tripura Ki Adiwasi Janjatiya Lok Kathayn
By : DINESH KANDWAL

प्रस्तावना

त्रिपुरा प्रदेश की जनजातियो का अपना एक इतिहास है, अपनी एक संस्कृति है और अपना एक अस्तित्व है। आदिवासी जनजातियों की सभ्यता और संस्कृति का एक मुख्य स्रोत है उनकी लोक कथाएं।

त्रिपुरा आदिवासी जनजातियों की लोक कथाओं का विस्तार बहुत ही सीमित रहा है। हालांकि बंगला लोक कथाओं पर आधारित कुछ पुस्तकें उपलब्ध हैं, लेकिन हिन्दी भाषा में लोक कथाओं का प्रकाशन यह पहला प्रयास है।

त्रिपुरा आदिवासी जनजाति सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान का हरदम यह प्रयास रहा है कि त्रिपुरा आदिवासी जनजातियो की संस्कृति का प्रचार सारे देश में किया जा सके।

हमे उम्मीद है कि हमारा यह प्रयास सफल होगा और इस पुस्तक के माध्यम से देशवासी त्रिपुरा की जनजातियों की लोक कथाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

श्री दिनेश कण्डवाल द्वारा लिखित यह पुस्तक अत्यन्त ही साधारण भाषा में लिखी गयी है, जो यहां की जनजातियों की लोक कथाओं को साधारण मनुष्य तक पहुंचाने में अत्यन्त सफल सिद्ध होगी।

त्रिपुरा जनजाति सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान भविष्य में भी ऐसे प्रयास करता रहेगा ताकि यहां की जनजातियों के इतिहास, परम्परा और संस्कृति का विस्तार किया जा सके।

(दिनेश त्यागी)
कमिश्नर
त्रिपुरा सरकार

मेरी बात

कुछ कहानियां, कथाएं इतनी पुरानी हैं कि कोई नहीं बता सकता कि उन्हें पहले-पहल किसने कहा होगा। ऐसी ही कथाओं को लोक कथा कहा जाता है। लोक-कथाएं एक कान से दूसरे कान में, केवल बोल-सुनकर एक देश से दूसरे देश में आती-जाती रहती हैं। एक जगह से दूसरी जगह जाने पर इन कथाओं का रूप रंग भी उसी अनुसार बदलता रहा, जिससे एक ही कथा अलग-अलग जगह पर अलग-अलग ढंग से कही-सुनी जाती है। इस तरह इन लोक-कथाओ मे हमेशा एक नयी ताजगी बनी रहती है। इन लोक-कथाओं में अक्लमंदी की सुन्दर-सुन्दर बातें रहती हैं।

लोक-कथाओं का अपना विशेष महत्व है। इसी कारण भाषा के विकास के साथ-साथ ये कथाएं भी कथा-पुस्तकों के रूप में फल-फूल रहीं है।

त्रिपुरा की आदिवासी जनजातियों में भी अनेक लोक-कथाएं प्रचलित हैं, जो पीढ़ी-दर पीढ़ी केवल कह-सुनकर चली आ रही हैं। इन्हीं लोक कथाओं को मैंने कलमबंद करने की कोशिश की है।

इन लोक-कथाओं को हिन्दी में लिखने की सलाह मुझे मेरे मित्र अरुण देव वर्मा से मिली, जो इसी संस्थान में रिसर्च स्कालर हैं। अरुण 'दा' के ही सहयोग से कमिश्नर श्री दिनेश त्यागी से मिलने का सौभाग्य मिला और श्री त्यागी के भरपूर सहयोग से ही आज यह कार्य संभव हो सका है। मैं उनका अत्यन्त आभारी हूं।

यह पुस्तक त्रिपुरा के सरकारी विभागों में शायद पहली हिन्दी पुस्तक होगी, जो राजभाषा हिन्दी की सम्पर्क भाषा के रूप में एक कड़ी होगी।

इस कार्य को पूरा करने में जिन्होंने सहयोग दिया, इनमें विशेष कर श्रीमती शम्पा चक्रवर्ती व सुश्री आर.चक्रवर्ती का दिल से आभारी हूं।

श्री शांतिमय चक्रवर्ती द्वारा लिखित बंगला लोक-कथाएं भी उपयोगी सिद्ध हुई, उनका विशेष आभार।

अपनी पत्नी सुलोचना के सहयोग के बिना तो यह कार्य असंभव ही था, क्योंकि घर की सारी जिम्मेदारियां उनके सिर पर थीं, मेरे इस कार्य में व्यस्त होने पर। यही कारण है कि मैं आज इस कार्य में सफल हो सका हूं।

इन लोक कथाओं पर पाठकीय प्रतिक्रियाओं का स्वागत है। आशा है कि पाठक अपने विचारों से अवगत करायेंगे।

(दिनेश कण्डवाल)

अगरतला
दिसम्बर'96

''जिन्होंने जन्म देकर इस संसार को दिखाया उनको सादर
एवम्
त्रिपुरा की आदिवासी जनजातियों की सांस्कृतिक विरासत
को समर्पित''

कथा-क्रम

चौदह देवता	-	11
तीन महिने तेरह दिन	-	13
जैसी करनी वैसी भरनी	-	18
जादुई अंगूठी	-	22
धनेश पक्षी	-	26
अजगर बना राजकुमार	-	30
चतुर साहिल	-	36
तुई मां	-	40
बंदर जमाई	-	43
सखी डारलोंग	-	49
आलसी पुजारी	-	52
बात न मानने की सजा	-	57
स्वर्ग का फूल	-	61
चांद कुमार	-	64
बधिर परिवार	-	69
दो बहनों का प्यार	-	73

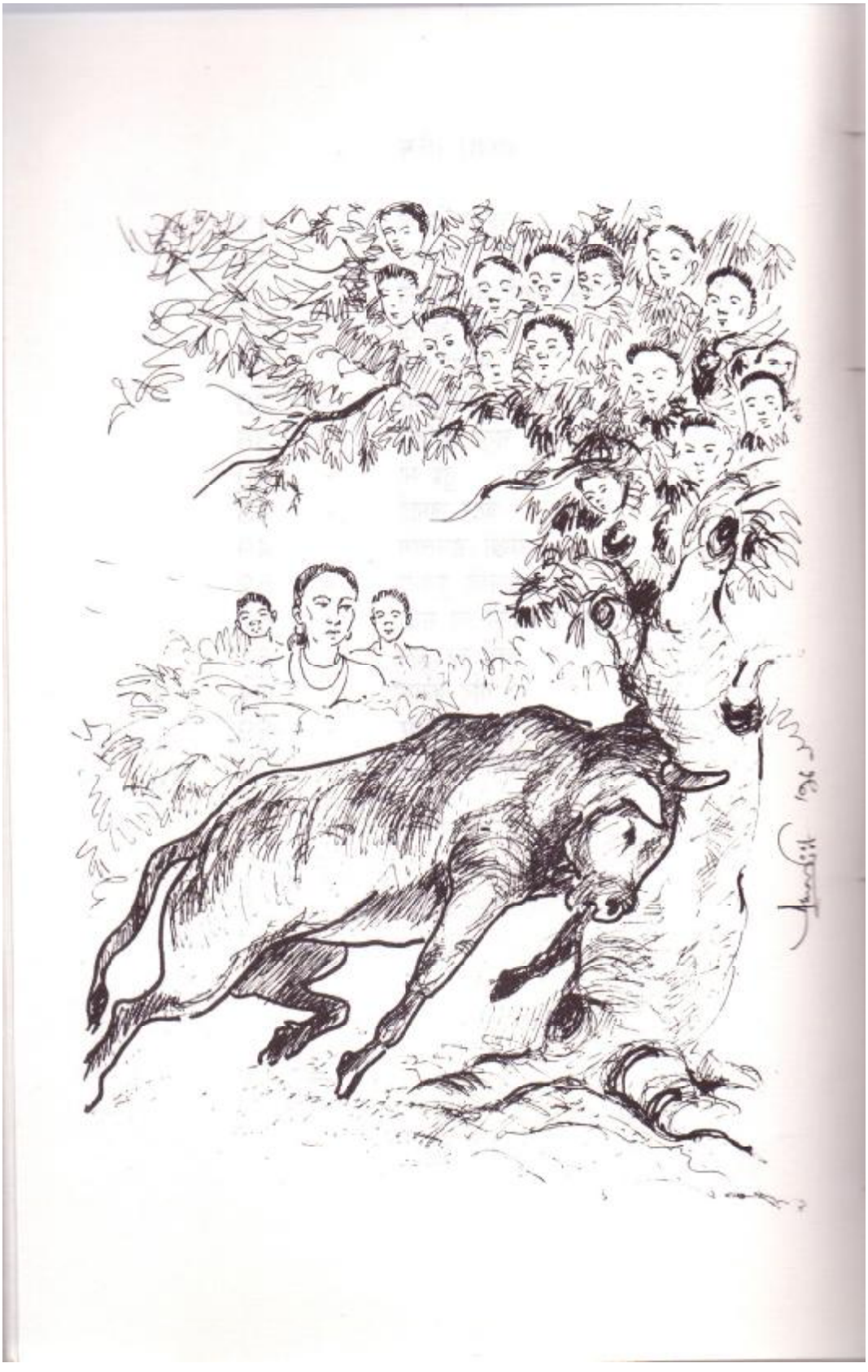

चौदह देवता

त्रिपुरा के प्राचीन काल का एक राजा था 'त्रिलोचन' और उसकी पत्नी का नाम था 'हीरावती'। एक दिन रानी रोज की भांति नदी में स्नान करने गयी। वर्षा हो रही थी, रास्ता भी सुनसान था। उस दिन स्नान करने के बाद जब रानी पानी का कलश भरने लगी, तभी उन्हें एक करुण आवाज सुनायी दी ''रानी माँ, रानी माँ, हमें बचाओ''। रानी ने आश्चर्य से चारों तरफ देखा परन्तु उन्हें कुछ न दिखायी दिया, वो फिर पानी भरने के लिए तैयार हुई, फिर वही आवाज सुनायी दी - कि रानी माँ हमें बचाओ।

बार-बार यह करुण आवाज सुनकर रानी सोच में पड़ गयी। रानी ने सोचा - देवता, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच जो भी क्यों न हो, उनकी बात का जवाब तो देना ही पड़ेगा। रानी ने पूछा, तुम कौन हो? अपना परिचय देकर मेरा सन्देह दूर करो।

उधर से साथ-साथ जबाव आया - ''रानी मां, हम चौदह देवता हैं और हमारे पीछे एक राक्षस रूपी भैंस पड़ा है, जो हमें मार डालना चाहता है, इसके डर से हम इस सेमल के पेड़ पर बैठे हैं और भैंस पेड़ के नीचे बैठा है। आज सात दिन हो गये, हम भूखे-प्यासे बैठे हैं। रानी मां, तुम ही वह भाग्यवती, सती-साध्वी त्रिपुरा की रानी हो, जो हमें

इस मुश्किल से बचा सकती है।

रानी देवताओं की ये बातें सुनकर बोली, ''आप लोगों ने स्वयं को देवता कहकर परिचय दिया है, पर आश्चर्य की बात, एक भैंस के डर के मारे पेड़ पर बैठे हो! जहां चौदह देवता कुछ नहीं कर सके, वहां भला मैं एक अकेली औरत क्या कर सकती हूं?''

देवताओं ने रानी को उपाय बताया कि तुम अपना ''रिया'' (वक्षस्थल ढकने का वस्त्र) इस भैंस पर डाल देना, इससे यह आपके वशीभूत होकर शान्त हो जायेगा और फिर इसकी बलि दे देना।

रानी ने ऐसा ही किया और प्रजा की मदद से भैंस की बलि दे दी गयी।

इसके बाद रानी इन चौदह देवताओं को राजमहल ले आयी। इस घटना का दिन था ''आषाढ मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमीं तिथी''। तब से ये चौदह देवता राज परिवार के साथ-साथ समस्त आदिवासी जनजाति के कुल देवता हैं। ❐

(आज भी त्रिपुरा के आदिवासी जनजाति के लोग इन चौदह देवताओं की पूजा ''खरची पूजा'' के रूप में हर वर्ष आषाढ़ मास में इसी तिथी को बड़ी धूम-धाम से मनाया करते हैं।)

तीन महीने तेरह दिन

नेथोक्बी नाम की एक सुन्दर आदिवासी लड़की थी। एक दिन वह सहेलियों के साथ खेत में काम कर रही थी, तभी वहां एक जंगली सूअर आ गया। लड़कियों में भगदड़ मच गई। लेकिन नेथोक्बी वहीं खड़ी रही। उसने तुरन्त धनुष पर बाण चढ़ाया और एक ही निशाने में सूअर को ढेर कर दिया। सहेलियों ने नेथोक्बी को घेर लिया।

कुछ देर में वहां एक घुड़सवार आया। उसके साथ कुछ सैनिक थे। घुड़सवार राजकुमार था। राजकुमार ने सूअर की ओर इशारा करते हुए पूछा - ''इस सूअर को किसने मारा है?'' सहेलियों ने मुस्कराकर नेथोक्बी की तरफ देखा।

नेथोक्बी बोली -''मैंने मारा है सूअर को।''

राजकुमार ने पूछा - ''तुम कौन हो? तुमने धनुष विद्या किससे सीखी है?

नेथोक्बी ने कहा - ''मेरे पिता का नाम सांद्रई है। मैंने उन्हीं से धनुष-बाण चलाना सीखा है।'' चाहें, तो आप भी यह विद्या उनसे सीख सकते हैं।

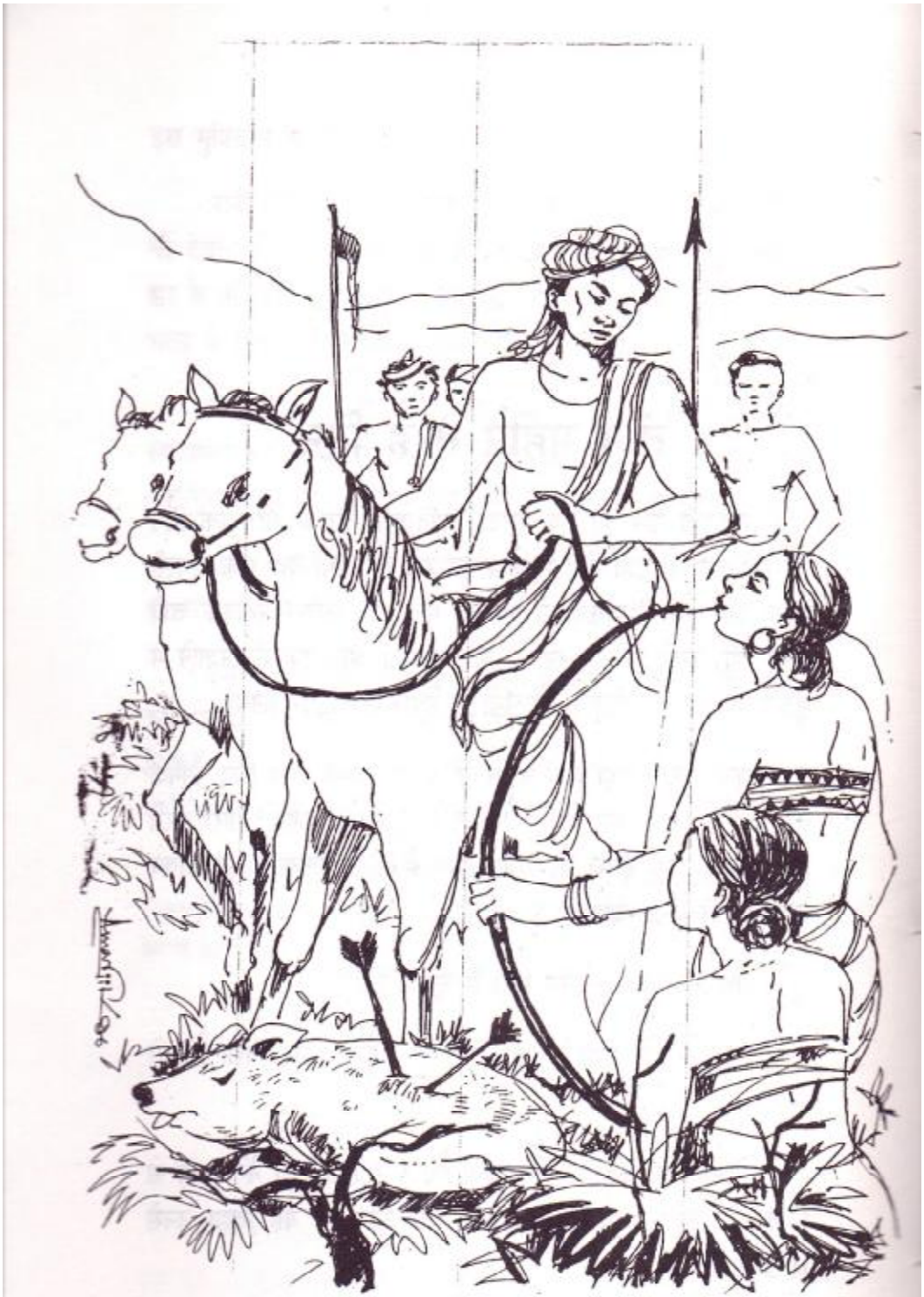

- "अच्छी बात है, पहले तुम अपने पिता से मुझे मिलवा दो।"

"चलिए घर चलें। वह अभी घर ही में होंगे।" - कहती हुई नेथोक्बी घर चल दी।

दोनों घर पहुंचे। नेथोक्बी ने अपने पिता को राजकुमार के बारे में बताया। फिर बोली - "यह आपसे धनुष-बाण चलाना सीखना चाहते हैं।" सांद्रई ने राजकुमार से कहा - "बेटा, कुछ दिन मेरे घर मेहमान बनकर रहो। इस दौरान मैं तुम्हें धनुष-बाण चलाना सिखा दूंगा।"

कुछ ही दिनों में राजकुमार धनुष-बाण चलाने में निपुण हो गया। एक दिन उसने नेथोक्बी से कहा - "अब मैं घर जाना चाहता हूं। तुम लोगों ने मेरी खूब खातिरदारी की। हां, एक बात और बता दूं कि मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूं। महल में पहुंचते ही मैं माता-पिता से इस बारे में बातचीत करूंगा। जल्दी ही विवाह का प्रस्ताव तुम तक पहुंच जाएगा"। राजकुमार ने सांद्रई और नेथोक्बी से विदा ली और चल दिया।

राजकुमार को महल में आए काफी दिन हो गए। वह उन दिनों काम में व्यस्त भी रहा। वह नेथोक्बी की खोज-खबर कैसे लेता? इसी बीच राजा की मृत्यु हो गई।

राजकुमार पर दु:ख का पहाड़ टूट पड़ा। किसी तरह से उसने धीरज रखा। राज्य के प्रमुख अधिकारियों ने उसे युवराज बना दिया।

अब वह राज-काज में इतना व्यस्त हो गया कि नेथोक्बी को बिल्कुल भूल ही गया।

कुछ वर्ष बाद युवराज विवाह योग्य हो गया। विवाह के लिए बढ़िया से बढ़िया प्रस्ताव आने लगे। लेकिन उसे कोई प्रस्ताव पसंद ही

न आता। उसने पूरे राज्य में घोषणा कराई कि जो लड़की ड्रेगन फ्लाई के पंख जैसा बढ़िया और सतरंगी कपड़ा बुनेगी, वह उसी से विवाह करेगा।

कई राजकुमारियों ने घोषणा के मुताबिक कपड़ा बुनने की कोशिश की, पर वे कामयाब न हो सकीं।

धीरे-धीरे यह बात नेथोक्बी के कानों में भी पड़ी। पर ड्रेगन फ्लाई के पंख जैसा कपड़ा कैसे बुना जाए? वह यह नहीं समझ पा रही थी। अचानक उसे याद आया 'हेचुक्मा' नाम की देवी मुसीबत में सबकी मदद करती हैं। उसने हेचुक्मा देवी की पूजा करने की सोची।

अगले दिन नेथोक्बी ने रुई, चरखा और एक बांस के टुकड़े का इंतजाम किया। यह सामान उसने घर में रखा, फिर हेचुक्मा देवी की पूजा करने लगी।

अब वह रोज जल्दी उठती, सुबह-शाम हेचुक्मा देवी की पूजा करती। बाकी समय घर में वह कपड़ा बुनती।

'तीन महिने तेरह दिन' में नेथोक्बी की पूजा पूरी हुई। वह बहुत खुश थी। उसके हाथ में बुना हुआ कपड़ा था। कपड़े के रंग इंद्रधनुष के रंगों की तरह चमक रहे थे। उस कपड़े का नाम था - 'रिया'।

राजकुमार को इसी कपड़े की तलाश थी। रिया का रंग ड्रेगन फ्लाई के पंखों जैसा था। सूरज की रोशनी में रिया में से सात रंग का प्रकाश निकलता था। नेथोक्बी ने कपड़ा अपने पिता को दिखाया और दरबार में जाने को कहा।

सांद्रई 'रिया' को लेकर महल में पहुंचा। युवराज ने रिया को देखा, तो उसे कुछ याद आया। उसने सोचा यह तो वैसा ही कपड़ा

है, जिसे मैंने वर्षों पूर्व जंगल में एक स्त्री को पहने देखा था। निश्चित ही वह स्त्री कोई देवी होगी।

युवराज को ध्यान में देख, सांद्रई बोला - ''युवराज किस सोच में डूब गए? मुझे पहचाना तक नहीं। मैंने ही तुम्हें धनुष-बाण चलाना सिखाया था और तुम ...।''

''हां, हां, मुझे याद आया। अब मै समझ गया कि आप नेथोक्बी के पिता सांद्रई हैं और उसने ही रिया को बुना है। कहता हुआ वह सिंहासन से उतरा। उसने आदर के साथ उन्हें आसान पर बैठाया। फिर सिपाहियों से कहा कि वे नेथोक्बी को ले आएं। नेथोक्बी जब दरबार में आई, तो दासियां उसे महल में ले गयी। युवराज ने नेथोक्बी से कहा - ''राज-काज में व्यस्त होने के कारण तुम्हें भूल गया था। पर यह बताओ कि तुमने रिया बुना कैसे?''

वह बोली - ''यह सब जंगल की देवी 'हेचुक्मा' का आशीर्वाद है।'' फिर उसने सारी बात बता दी।

युवराज बोला - '' अब मैं समझा कि मैंने कुछ वर्ष पूर्व जंगल में हेचुक्मा देवी को ही देखा था। क्योंकि उन्होंने भी रिया पहना हुआ था।''

कुछ दिन बाद युवराज और नेथोक्बी का विवाह हो गया। ❐

(आज भी त्रिपुरा में विवाह से पहले लड़कियां कपड़ा बुनना जरुर सीखती हैं।)

जैसी करनी वैसी भरनी

लंगतराई नाम के पहाड़ पर एक गांव था, गांव के एक घर में एक मुर्गी व बिल्ली में गहरी दोस्ती थी। किसी कारणवश बिल्ली के मन में खोट पैदा हो गई और वंह मुर्गी को दबोचने की सोचने लगी।

एक दिन बिल्ली ने मुर्गी से पूछा- तुम कहां सोती हो? मैं सुबह तुम्हारे लिए नाश्ता लेकर आऊंगी। मुर्गी, बिल्ली के मन की बात समझती थी। उसने कहा वहीं अपनी टोकरी में सोती हूं।

मुर्गी टोकरी के बजाय छत पर सो गई, रात को जब बिल्ली, मुर्गी को दबोचने टोकरी पर पहुंची, तो उसे खाली हाथ लौटना पड़ा।

अगले दिन बिल्ली, मुर्गी से बोली न जाने तुम कहां सो गई थीं, मैं सुबह तुम्हारे लिए नाश्ता लेकर आई थी, परन्तु तुम टोकरी में थी ही नहीं। खैर आज बताओ, कहां सोने का विचार है? ताकि कल सुबह तुम्हारी सेवा कर सकूं।

मुर्गी ने कहा, आज मैं छत के ऊपर सोऊंगी, तुम वही आ जाना। परन्तु मुर्गी टोकरी में जाकर सो गई। इस बार भी बिल्ली को खाली हाथ लौटना पड़ा।

इस तरह यह लुका-छिपी का खेल कई दिनों तक चलता रहा। हर बार मुर्गी, बिल्ली को चकमा दे जाती, आखिरकार एक दिन बिल्ली ने मुर्गी को धर-दबोचा और खा गई।

इस बीच मुर्गी ने एक अंडा दे दिया था, जो वहीं कोने में पड़ा था और उसके अन्दर का चूजा अपनी मां की हत्या होते देख रहा था। चूजे ने तभी कसम खाई कि अपनी मां की हत्या का बदला अवश्य लूंगा।

कुछ समय बाद चूजा अंडे से बाहर निकला। बिल्ली भी यह जगह छोड़ दूसरी जगह चली गई थी।

चूजे ने गांव में कई लोगों से दोस्ती कर ली थी, उसके चार खास दोस्त थे, इन चार दोस्तों में कुत्ता, सिंघी मछली (कांटे वाली मछली), बोराई (मछली मारने का कांटा), तथा बांथर (बांस का बना ब्लेड) थे।

चूजे ने एक दिन उनको अपनी दुख भरी कहानी सुनायी, कि किस तरह वह अनाथ हो गया था और उसने बिल्ली को मारने की कसम खाई है। उसके इन चारों दोस्तों ने उसे मदद करने का वचन दिया।

एक दिन वे पांचों मिलकर बिल्ली के घर गए, चूजे ने दरवाजा खटखटाया, बिल्ली ने दरवाजा खोला और पूछा ''तुम कौन हो, और क्या काम है।''

चूजा बोला - नमस्ते मौसी, मैं आपकी दोस्त मुर्गी का बेटा हूं, और अपने दोस्तों के साथ यहां घूमने आया हूं परन्तु देर हो गई है, इसलिए आज रात हम आपके पास ही ठहरेंगे।

बिल्ली ने कहा, ठीक है, मुझे तो तुम्हारे यहां ठहरने पर खुशी

होगी।

उस रात को वे पांचों बिल्ली के घर रुक गए और रात को उन्होंने योजना अनुसार काम शुरू कर दिया।

चूजा, घर के चूल्हे के पास बैठ गया और उसने आग में एक अंडा गर्म करने रख दिया, कुत्ता घर के दरवाजे के पास बैठ गया। सिंघी मछली पानी के घड़े में घुस गई, बोराई दरवाजे के बीच लटक गया और बांथर घर की दीवार पर सट कर चिपक गया।

सारी तैयारियां पूरी होने के बाद चूजे ने आवाज दी - मौसी-मौसी, बिल्ली अब बुढ़िया हो चुकी थी, ''उसे रात को ठीक से दिखाई नहीं देता था'', वह आग के पास रोशनी लेने गई कि चूजे को देखूं, क्यों आवाज दे रहा है।

आग छेड़ते ही, उसमें रखा अंडा बम की तरह फटा जिससे बिल्ली का चेहरा बिगड़ गया और उसकी आंखें भी बंद हो गई। बिल्ली ने दोनों हाथों से चेहरा ढका और मुंह धोने के लिए घड़े में हाथ डाला, परन्तु वहां 'सिंघी मछली' ने जोर से हाथ काट खाया। बिल्ली घबराई कि क्या हो गया, वह दीवार का सहारा लेकर बाहर निकलने को रास्ता ढूंढने लगी। दीवार पर चिपके 'बांथर' ने जोर से उसका हाथ चीर डाला, इससे बिल्ली दर्द से तिलमिला कर बाहर निकलने को हुई परन्तु दीवार पर लटका 'बौराई' उसके गले में फंस गया, बिल्ली अब अधमरी हो चुकी थी, शेष कार्य दरवाजे पर बैठे कुत्ते ने पूरा कर दिया।

इस प्रकार चूजे ने बड़ी बुद्धिमानी से, अपने दोस्तों की सहायता से अपनी मां की हत्या का बदला ले लिया। उसने दोस्तों का धन्यवाद दिया और सब अपने घर की ओर चल पड़े। ❐

जादुई अंगूठी

बहुत समय पहले की बात है, दो अनाथ लडके अपनी दादी मां के साथ रहते थे। एक दिन जब वे अपनी ''झूम'' खेत की कटाई कर रहे थे तो उन्हें चिड़िया के अंडे मिले, जिसे दोनों भाइयों ने वहीं खेत पर पका कर खा लिया।

जब वे घर लौटे तो दादी मां ने पूछा, तुमने क्या खाया, जो आज तुम खाना नहीं मांग रहे हो। उन्होंने बताया कि उन्हें अंडे मिले थे जिसे उन्होंने खा लिया। इस पर दादी मां बोली कि हम तो हमेशा तुम्हारे साथ मिलकर खाते हैं और तुमने हमारी जरा भी परवाह नहीं की? इसलिए अब हम तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे, तुम लोग अकेले ही रहना।

जब दोनो भाई अगले दिन ''झूम'' चले गए तो दादी मां उन्हें अकेले छोड़कर चली गई। जब वे दोनों भाई शाम को वापस आए तो उन्हें दादी मां न मिली। दोनों भाई दादी मां को ढूंढते-ढूंढते दूर जंगल की ओर चले गए।

एक जगह जंगल में एक पेड़ पर कुछ फल लगे दिखाई पड़े। एक भाई ने कहा, भूख लगी है, ये फल खाते हैं। जैसे ही उसने एक फल

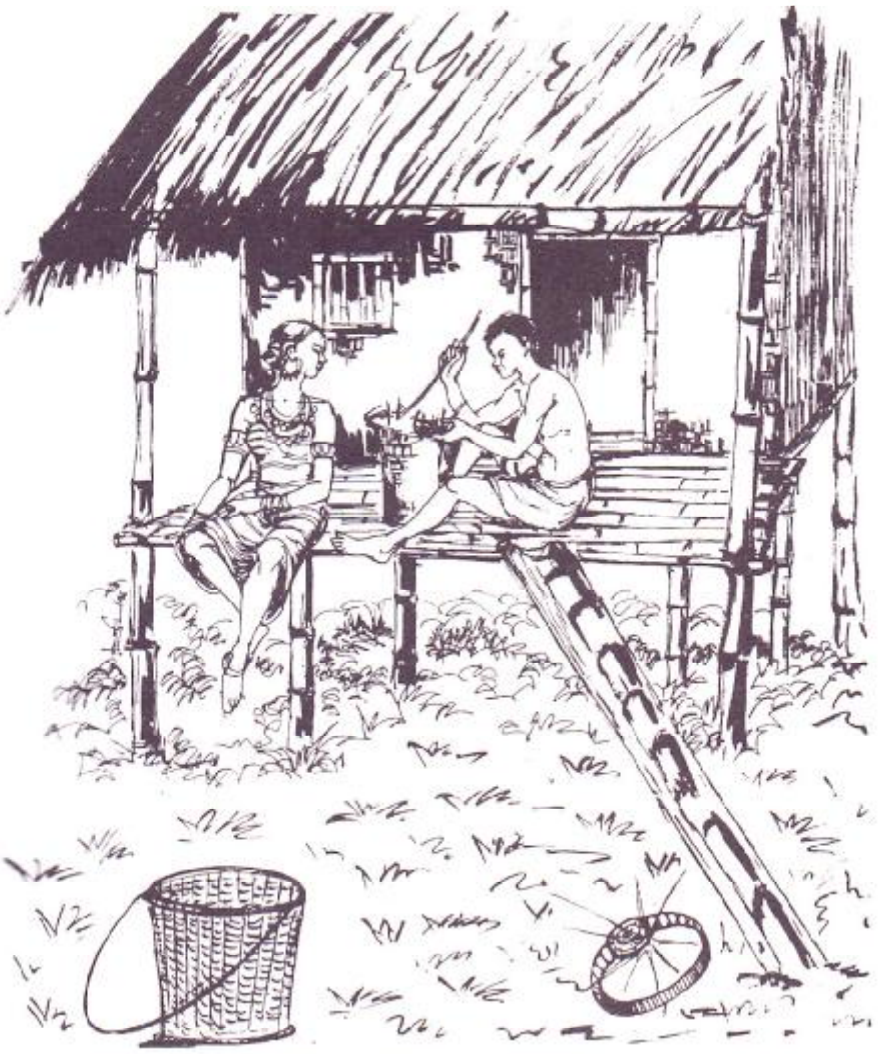

तोड़कर खाया, वह ''चिड़िया'' बन गया। इससे छोटा भाई बहुत दु:खी हुआ, अब वह अकेला ही रह गया। उसने वहीं जंगल में पेड़ की ''खोह'' में अपना घर बना लिया।

उसी के पास झूम में एक विधवा औरत रहती थी। उस लड़के ने झूम से फल वगैरह चुराना शुरू कर दिया।

एक दिन उस औरत ने उसे पकड़ लिया और पूछा तुम कौन हो? इस पर लड़के ने अपना पूरा हाल बताया और कहा कि वह तीन-चार दिन से भूखा है। उस विधवा औरत को उस पर दया आ गई और उसे अपने साथ रहने को कहा, परन्तु लड़का नहीं माना।

एक दिन एक यमदूत ने लड़के को देखा और पूछा तुम कौन हो? यहां क्या कर रहे हो? यमदूत को लड़के ने अपनी दुखभरी कहानी बताई, तो यमदूत को लड़के पर दया आ गई और उसने उसे एक ''जादुई अंगूठी'' दी, कि तुम्हारी हर इच्छा इस अंगूठी से पूरी हो जाएगी। इसे सदा अपने पास रखना, इस अंगूठी का नाम ''झेरुवांसा'' है।

एक दिन लड़के ने उस विधवा औरत के लिए अंगूठी की मदद से एक सुन्दर ''टांग'' घर बनाया। जिसने भी वह घर देखा, प्रशंसा की कि कितना सुन्दर घर है। उस औरत ने उसे कहा कि वह उसके साथ उसका पुत्र बनकर रह सकता है, परन्तु लड़का नहीं माना। उसने कहा कि मुझे बहुत से काम करने हैं, इसलिए वह नहीं रह सकता।

उन्हीं दिनों वहां के राजा ने ऐलान किया कि जो भी अपने हथियार के एक ही वार से उसके जानवर का सिर धड़ से अलग कर देगा, उसी के साथ वह अपनी सुन्दर कन्या का विवाह कर देगा।

लड़का अपना भाग्य अजमाने वहां गया। लड़के ने इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी। वह उसे देखकर बहुत शर्माया और ऐसा करने में संकोच कर रहा था। तभी एक चिड़िया ने आकर उसे साहस दिया कि वह इसे अवश्य कर दिखाए और फिर उसके पास तो जादुई अंगूठी है।

लड़के ने अंगूठी की मदद से देखा कि वह चिड़िया तो उसका भाई है, उसने अंगूठी की मदद से फिर अपने भाई को असली रूप मे पा लिया।

इसके बाद भाई के साहस दिलाने व अंगूठी की सहायता से उसने जानवर का सिर अपने ''दाव'' (तेज हथियार) से एक ही वार में धड़ से अलग कर दिया।

राजा ने लड़के को शाबासी दी और बहुत-सा इनाम देकर अपनी लड़की की शादी धूमधाम से उसके साथ कर दी और वे सुख से रहने लगे। लड़के का नाम अन्तोकुमार था, ऐसा कहते हैं। ❐

धनेश पक्षी

बहुत समय पहले तिपरा पहाड़ के उस पार एक छोटा सा गांव था। उस गांव में एक दम्पति परिवार रहता था। दोनों का सुखी संसार था। वे झूम खेती करते थे। आदमी का नाम 'कचाक राय' और पत्नी का नाम 'छम्पारी' था। छम्पारी बहुत अच्छी, भोली-भाली तथा परिश्रमी औरत थी। उनका खेत बहुत बड़ा था, फसल भी खूब होती थी, परन्तु उसका पति कचाक बहुत ही आलसी और गुस्से वाला आदमी था। वह, कुछ भी काम नहीं करता था। घर का सारा काम, यहां तक कि झूम की सिंचाई, फसलों की मढाई-कटाई भी छम्पारी अकेले ही करती थी।

कचाक दिन-भर नशे में चूर रहता या फिर सारा दिन आंगन में बैठकर बांसुरी बजाता रहता। छम्पारी अकेले ही सब कामकाज संभालती थी। थोड़ी सी गलती होने पर कचाक उसे खूब डांटता था, पर छम्पारी उसकी बहुत इज्जत करती थी, कभी पलट कर जवाब नहीं देती थी।

इसी सुख-दु:ख में दिन बीतते रहे। अब छम्पारी मां बनने वाली थी, आजकल वह बहुत खुश थी, अपने आने वाले बच्चे के बारे में सोचा करती। समय आने पर उसने एक स्वस्थ-सुन्दर बेटे को जन्म दिया।

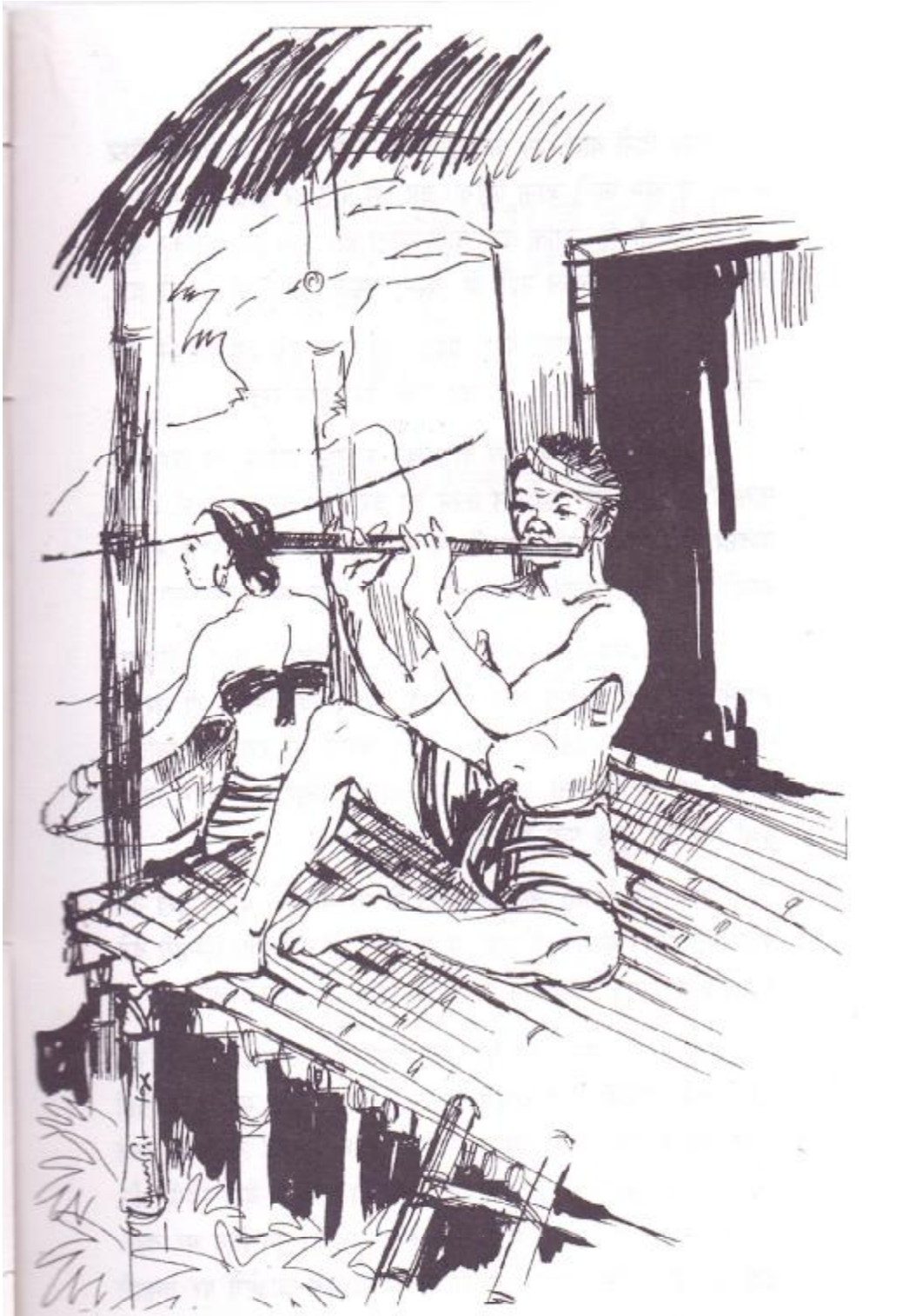

कुछ दिनों बाद झूम का मौसम आ गया। अब छम्पारी को फिर से खेत में काम करने जाना पड़ेगा। वह इसे पीठ पर बांध कर भी काम नहीं कर सकती थी क्योंकि बेटा बहुत छोटा था। बच्चे को छोड़कर जाने का उसका मन बिल्कुल नहीं था, परन्तु उसका जाना भी जरूरी था।

वह बच्चे को झूले में सुलाकर खेत पर जाती और अपने पति कचाक से बार-बार कहती कि वह बच्चे का ध्यान रखे।

एक दिन वह हमेशा की तरह खेत पर गई। हमेशा की तरह पति कचाक को बच्चे की देखभाल करने को कह गई। कचाक ने भी हां-हां कहकर उत्तर दिया। पत्नी छम्पारी के चले जाने के बाद कचाक बांसुरी बजाने बैठ गया, बच्चा अकेला सो रहा है, उसे ध्यान नहीं रहा।

घर के पीछे एक छोटा सा जंगल था जिसमें भालू, भेड़िया, जंगली कुत्ते जैसे जानवर रहते थे। एक भालू मौका मिलते ही घर से चुपचाप बच्चे को उठाकर निकल गया। बच्चा सो रहा था इसलिए आवाज भी नहीं निकली, उधर कचाक अपनी बांसुरी के सुर में खोया हुआ था। उसे कुछ पता ही नहीं चला।

शाम को छम्पारी जब घर लौटी तो घर में बच्चे को न देख कर घबरा गई। उसने कचाक से पूछा पर बहुत देर हो चुकी थी। छम्पारी बेटे के शोक में व्याकुल हो रोने लगी और पति को कोसने लगी।

छम्पारी ने अपने पति को श्राप दिया कि "अगले जन्म में तुम पक्षी बनोगे। तुम्हारी चोंच बांसुरी की तरह लम्बी होगी। स्वर मीठा नहीं बल्कि कर्कश होगा, जिसे सुनकर लोग तुम्हारा मजाक उड़ायेंगे। बच्चे बड़े होने तक तुम्हारी पत्नी बच्चों को कलेजे से लगाकर बैठी रहेगी और तुम्हें घर-बाहर का सारा काम अकेले करना पड़ेगा। तुम दिन भर यहां-वहां ढूंढ कर उनके लिए खाना लाओगे। तुम थक जाओगे पर तुम्हारी

मदद वाला कोई नहीं होगा।''

उसी दिन से मां (धनेश) पक्षी बच्चे बड़े होने तक उनकी दिन भर देख-रेख करती है और धनेश (पुरुष) पक्षी सुबह-शाम उनके खाने के लिए परिश्रम करके घर लौटता है।

आज भी धनेश पक्षी को ऐसे ही अपना जीवन निर्वाह करते देखा जा सकता है। ❐

(धनेश पक्षी त्रिपुरा सहित समस्त उत्तर-पूर्वी भारत में पाया जाता है।)

अजगर बना राजकुमार

हजारों वर्ष पहले एक राजा की दो रानियां थी। बड़ी रानी 'शांति' जो स्वभाव से भी शांत व दयावान थी। छोटी का नाम 'रूपा' था परन्तु थी कठोर व दुष्ट।

बडी रानी की एक पुत्री थी तुली और छोटी रानी की भी एक पुत्री थी 'शुक्ला'।

स्वभावनुसार छोटी रानी चाहती थी कि राज्य की सत्ता उसके हाथ में रहे। राजा भी उससे डरता था। छोटी रानी, बड़ी रानी की बेटी से नफरत करती थी और एक दिन छोटी रानी ने बड़ी रानी और बेटी तुली को राजमहल से बाहर कर दिया।

राजा ने उनका प्रबन्ध राजमहल से बाहर एक छोटे से घर में कर दिया।

छोटी रानी का दिल इससे भी नहीं भरा। छोटी रानी ने तुली को आज्ञा दी कि वह प्रतिदिन राजा की गायों को जंगल में चराने के लिए ले जाया करे।

तुली, अपनी छोटी मां की आज्ञा का पालन कर चुपचाप गायों

को लेकर जंगल चली जाती और शाम को घर ले आती।

एक दिन जब तुली शाम होते घर लौटने लगी तो उसे आवाज सुनाई दी।

तुली, तुम क्या मुझसे शादी करोगी?

तुली ने कुछ जवाब न दिया और घर जाकर यह बात अपनी मां को बताई।

अगले रोज मां ने तुली से कहा, अगर आज भी तुम्हें यह आवाज सुनाई दे तो कहना ''मेरे घर कल सुबह आ जावो'', मैं तुमसे शादी कर लूंगी।

परन्तु मां, जिसको हम जानते तक नहीं उससे कैसे शादी कर सकती हूं, तुली ने मां से कहा।

मां ने तुली को समझाया, जिस हालत में हम हैं उससे तो अच्छा ही होगा, क्योंकि प्रस्ताव उसका है। बाकी भगवान जो करेगा अच्छा ही करेगा।

उस शाम को तुली जब गायों को लेकर घर लौट रही थी तो उसे फिर वही आवाज सुनाई दी।

तुली ने पीछे मुड़कर देखा, उसे कोई दिखाई नहीं दिया। उसने अपनी मां के कहे अनुसार उससे कहा - ''हां, तुम कल सुबह घर आ जावो, मैं तुमसे शादी कर लूंगी।''

अगले दिन, सुबह जब माँ ने घर का दरवाजा खोला, उसे वहां कोई न दिखाई दिया, सिवाय एक अजगर के।

तभी अजगर बोला - ''मुझे ही बुलाया गया था, इसीलिए मैं आया हूं। आपकी कन्या ने मेरे से ही शादी करने का वायदा किया है''।

रानी ने कभी सोचा भी न था, कि ऐसा हो सकता है परन्तु यह सब करनी व भाग्य के भरोसे छोड़ दिया।

इसी बीच यह बात छोटी रानी को पता चल गयी, वह तो बहुत खुश थी कि तुली की शादी अजगर से। यह तो बहुत अच्छा हुआ। उसने फरमान जारी किया कि बड़ी रानी व उसकी बेटी को अपना वायदा निभाना चाहिए। यही राजघराने की परम्परा है।

छोटी रानी ने तुरत-फुरत में दोनों कि शादी भी करा दी।

विवाह के पश्चात बड़ी रानी बहुत चिंतित हुयी और प्रार्थना करने लगी, 'हे भगवान मेरी बेटी की रक्षा करना'।

दूसरे दिन सुबह रानी ने जब कमरे का दरवाजा खटखटाया और तुली को पुकारा तो एक सुन्दर नवयुवक ने दरवाजा खोला।

नवयुवक ने रानी को प्रणाम किया और बताया कि वह भी पडोसी राज्य का राजकुमार है, जो जंगल में शिकार करने आया था और 'वन देवता' के श्राप के कारण अजगर में बदल गया। बाद में वन देवता की पूजा अर्चना करने पर उन्होंने उपाय बताया, जब कोई अच्छे गुणों वाली राजकुमारी तुमसे विवाह करेगी तो तुम फिर से राजकुमार बन जाओगे।

माँ, अब मेरा श्राप उतर चुका है। अब मैं कभी अजगर नहीं बनूंगा।

रानी बहुत प्रसन्न हुयी। वह बेटी-दामाद को राजमहल में ले गयी और पूरी घटना बताई।

छोटी रानी को तो मानो सांप सूंघ गया था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि यह अनर्थ कैसे हो गया?

तुली के भाग्य से उसे और भी जलन होने लगी। वह सोचने लगी काश! ''मेरी बेटी का भाग्य भी ऐसा ही होता, उसे भी इतना ही अच्छा लड़का मिल जाता''।

छोटी रानी ने सोचा, जब तुली को गाय चराने से ऐसा उत्तम वर मिल गया, तो मेरी बेटी शुक्ला को भी मिलेगा। उसने उसे भी जंगल भेजना शुरू कर दिया गायों के साथ।

लड़की न चाहते हुए भी बिना इच्छा के जोर-जबरदस्ती से चली जाती और मां के कहेनुसार इस बात का इन्तजार करती कि कब पीछे से आवाज आयेगी, शादी का प्रस्ताव लिये और कब मैं हाँ करुं।

ऐसा करते-करते छोटी लड़की को काफी समय गुजर गया परन्तु बात न बनी।

आखिरकार, छोटी रानी ने खीझ कर एक बड़े अजगर का प्रबंध किया और शुक्ला की शादी उससे कर दी।

शादी के बाद दोनों को एक कमरे में बंद कर दिया।

रानी को सुबह की प्रतीक्षा बड़ी बेसब्री से थी। सुबह होते ही उसने दरवाजा खटखटाया लेकिन दरवाजा न खुला। तब दरवाजा तोड़ा गया। लड़की का कहीं पता न था, अलबत्ता अजगर एक कोने में अलमस्त होकर पड़ा था।

रानी ने जोर-शोर से रोना शुरु कर दिया। बेटी शुक्ला कहां हो?

सब लोग हैरत में थे कि राजकुमारी शुक्ला कहां है?

वह तो अजगर के पेट में है, राजा का सेनापति बोला। देखो अजगर का पेट कितना मोटा हो रखा है?

सेनापति ने तुरन्त अजगर का पेट चीर डाला और राजकुमारी शुक्ला को बाहर निकाला।

राजकुमारी जिन्दा थी, इससे सभी को खुशी हुयी।

छोटी रानी को अपने किये पर बहुत पश्चाताप था। उसने बड़ी रानी और बेटी तुली से भी क्षमा मांगी और भविष्य में कभी किसी का बुरा न करने की कसम खाई।

तब से वे सभी हंसी-खुशी साथ-साथ रहते थे। ❐

चतुर साहिल

डोम्बूर घाटी में एक बार हाथी नदी में पानी पीने आया। पानी पीने नीचे उतरते ही उसने देखा कि पानी बिलकुल गंदा है। लगता है कोई यहां अभी-अभी नहाकर गया है, उसने सोचा।

उसे बहुत प्यास लगी थी, इसलिए बड़ा गुस्सा आ रहा था। अभी उसे मजा चखाता हूं, जिसने यह पानी गंदा किया है।

हाथी उसे ढूंढने निकल पड़ा।

थोड़ी दूर जाते ही उसने एक ''साहिल'' को नदी में नहाकर अपने गड्ढे में घुसते हुए देखा। परन्तु दूर से हाथी उसे ठीक तरह देख नही पाया था इसलिए वह निश्चित नहीं हो पाया कि वह कौन सा जानवर है।

वह दूर से उसे देखते ही चिल्लाया ''तूने मेरा पानी गंदा किया है?

इधर उस साहिल ने अपना पूरा शरीर मांद के अंदर घुसाकर केवल मुंह बाहर निकाला। वह जोर-जोर से कहने लगा। क्या-क्या, तुम मुझ पर इल्जाम लगा रहे हो। मुझे इस तरह आंखें मत दिखाओ।

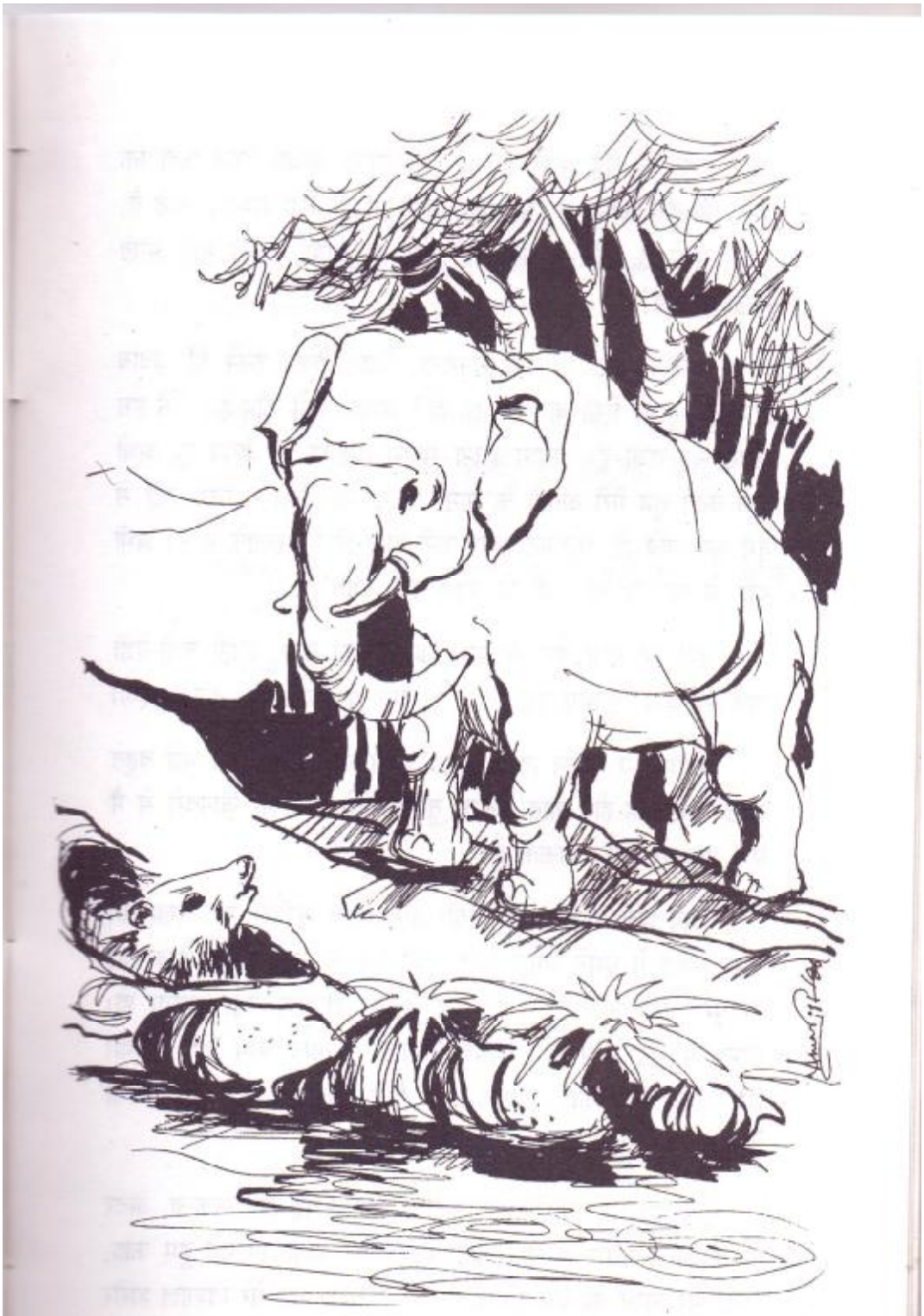

हाथी को यह सुनते ही और भी गुस्सा आया। उसने कहा कि जानते हो इस जंगल में रहने वाले सभी जानवर मेरा सम्मान करते हैं, मुझसे डरते है, और तू पता नहीं कहां से आया, उल्टा मुझे आंखें दिखा रहा है?

साहिल थोड़ा भी नहीं घबराया, निडर होकर उसने भी जवाब दिया-तुम मुझसे ऐसी बातें कर रहे हो? जानते हो मैं कौन हूं? ''मैं इस जंगल का राजा हूं। तुम्हारा इतना साहस देखकर, मैं हैरान हूं, अभी इसी वक्त तुम मेरी आंखों के सामने से दूर हो जावो''। जिस नदी से तुम पानी पीते हो, वह नदी और पानी दोनों ही मेरे इलाके में हैं। अभी यहां से चले जाओ, नहीं तो बहुत बुरा होगा।

इस पर हाथी जोर से गरज उठा। उसने कहा, इतनी बड़ी-बड़ी बातें मत करो, तुम्हारा पूरा शरीर मेरे एक पांव के तले दब जाएगा।

साहिल ने जवाब दिया, अरे! जाओ-जाओ, तुम क्या मुझे बहुत छोटे समझ रहे हो? याद रखना, तुम्हारे जैसे तीन-चार जानवरों से मैं एक हाथ से निपट सकता हूँ।

अब हाथी थोड़ा घबरा गया। उसने कभी साहिल नहीं देखा था। उसने गड्ढे में घुसते समय साहिल की पूंछ का कुछ हिस्सा देखा था, पर पूरा शरीर नहीं। कौन जाने यह सचमुच ही कोई बड़ा जानवर हो। परन्तु अब डरने से क्या फायदा। घबराने से अब काम नहीं चलेगा। उसने चिल्लाकर कहा, ''फिर बाहर निकल आओ, जरा हम भी तो देख लें कि तुम कितने बड़े जानवर हो?

साहिल भी उसकी चाल समझ गया था। वह नही निकला, अंदर से ही अपने शरीर से एक कांटा निकालकर हाथी को देते हुए कहा, ''यह मेरे शरीर का एक रोम है'', इसे परखकर तुम मेरे विशाल शरीर

का अन्दाजा लगा सकते हो।

हाथी उस 'कांटे' को देखकर सोचने लगा कि, यह तो लोहे के समान कठोर है, ऊपर से इतना नुकीला। मैंने बहुत जानवर देखे हैं, पर ऐसा तो कभी नहीं देखा। अब हाथी सचमुच डर गया और वहां से चुपचाप चल दिया।

साहिल खूब जोर-जोर से हंसने लगा। वह मन ही मन कहने लगा, शरीर में वह मुझसे बड़ा हुआ तो क्या हुआ, बुद्धि में मैं भी किसी से कम नहीं हूं।

सचमुच बुद्धिमानी से हर कोई बड़ी से बड़ी मुसीबत से बच सकता है। ❐

तुई मां

एक गांव गण्डाचेरा। चार-पांच घरों में एक गरीब परिवार भी था। परिवार में भी केवल मां-बेटा।

मां, रोज सोचा करती कि किसी तरह बेटे को अच्छा से अच्छा खाना मिले, पर ऐसा संभव न था क्योंकि गरीबी जो आड़े आती थी।

एक दिन घर में कुछ न था। मां ने मछली वाले से विनती कि, परन्तु वह उधार देने को तैयार न हुआ।

शाम को मां ने यही बात बेटे को बतायी कि आज तेरे लिए अच्छा खाना न बना सकी। बेटे ने मां को आश्वासन दिया कोई बात नहीं। मां कल बना लेना।

अगले दिन लड़का जंगल से लकड़ी लाकर उसे बेचकर चावल ले लेता है, परन्तु मछली के लिए पैसे नहीं बचते। लड़के ने सोचा रास्ते में राजा का पोखर है उसी से मछली पकड़ लूंगा।

लड़का पोखर में काफी देर तक कोशिश करता रहा, परन्तु कोई मछली हाथ न लगी। शाम होने को थी। लड़के ने खीझ कर राजा के पोखर से एक 'राजहंस' पकड़ कर थैले में डाल दिया।

मां, राजहंस को देखकर घबरा गई और उसे वापिस छोड़ आने को कहा। लड़का न माना और हंस को काट लाया कि मां इसे पका

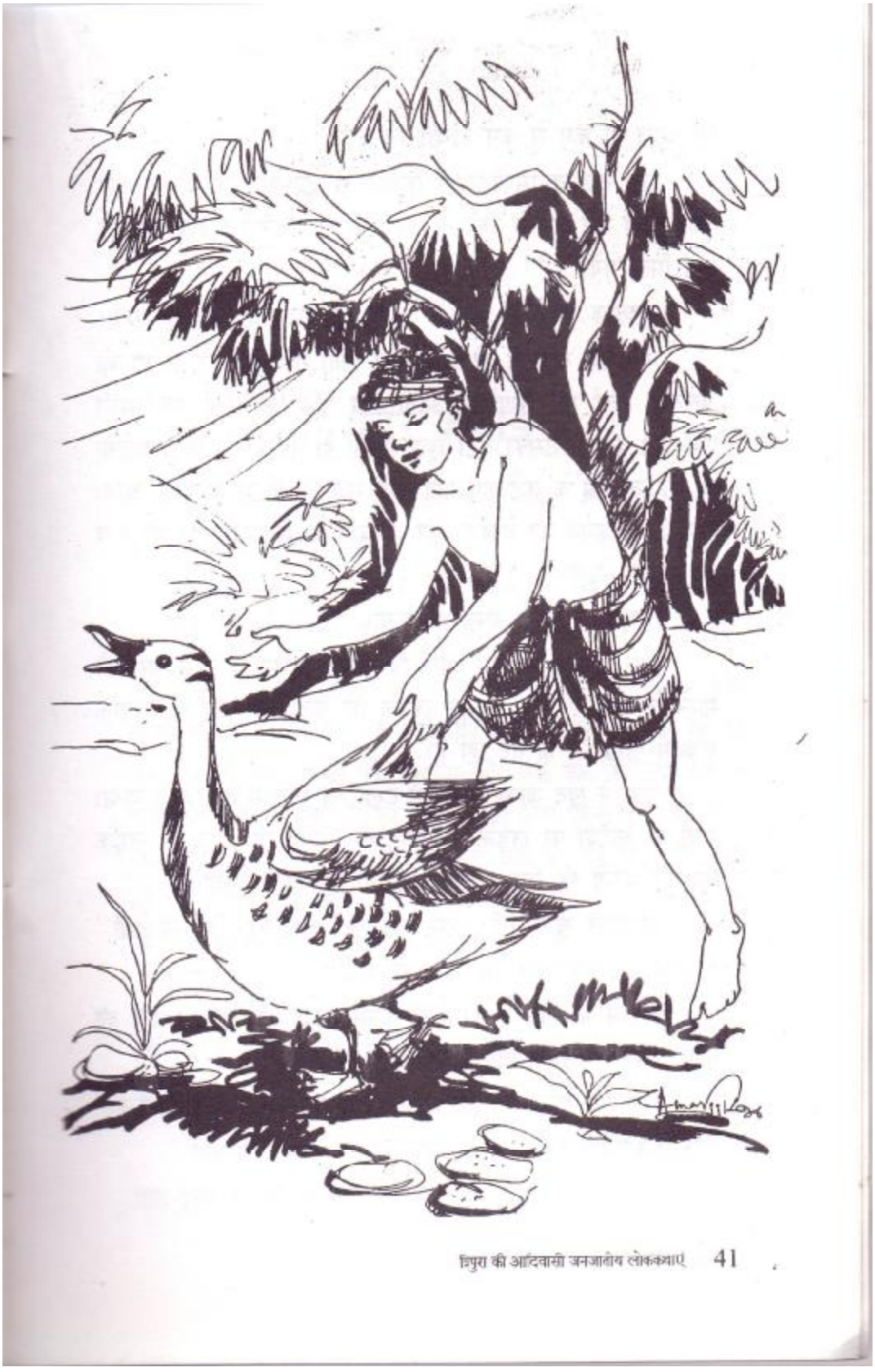

ले। आज तो कम से कम अच्छा खा लें।

इधर राजा के सिपाहियों ने राजहंस की ढूंढ शुरू कर दी। सिपाही ढूंढते-ढूंढते जब गांव में आये तो उन्हें एक घर के पीछे राजहंस के कटे पंख मिल गये।

पूछताछ करने पर सिपाही लड़के को गिरफ्तार करके ले गयी।

मां इससे बहुत दु:खी व परेशान हुयी। रात को सोने पर मां को जलदेवी ''तुई मां'' सपने में आयी और कहा कि अगर वह उसकी पूजा-पाठ करे तो उसका बेटा छूट सकता है। तुई मां ने उपाय बताया कि वह राजहंस के कटे हुए पंख उसी राजा के पोखर में छोड़ आये। फिर पीछे मुड़कर मत देखना और हां बेटा के छूट जाने पर पूरे गांव को प्रसाद खिलाना।

लड़के की मां ने ऐसा ही किया।

इधर राजा को सपना आया कि उसके सिपाहियों ने राजहंस को मारने के जुर्म में एक बेकसूर लड़के को कैद कर रखा है, जबकि राजहंस पोखर में ही तैर रहा है।

राजा ने खुद जाकर पोखर में देखा, तो राजहंस को जिन्दा पाया। राजा के आदेश पर लड़के को मुक्त कर दिया गया। राजा ने लड़के को पांच रुपये भी दिये। लड़का मां के पास लौट आया।

मां बहुत खुश हुयी। उसने उस पांच रुपये का ''तुई मां देवी'' का प्रसाद मंगाया और सारे गांव में बांटा।

बेटे ने भी चोरी न करने की कसम खायी और तुई मां देवी की पूजा अर्चना से उनके दिन अच्छे बीतने लगे। ❐

(त्रिपुरा में 'तुई मां' की पूजा का प्रचलन अभी भी है। यह एक प्रकार से नदी/पानी की पूजा है।)

बंदर जमाई

सर्दी का मौसम था, झूम काटने का समय नहीं आया, खेत में अभी भी फसल बहुत है। पर यहां बंदर बहुत होने के कारण, लोग डरते थे, कि उनकी फसल वे नष्ट न कर दें। इसलिए आज गांव की सभी लड़कियां झूम में फसल काटने जा रही थी।

खेत में जाकर उन्होंने देखा कि एक बंदर, चुन-चुन कर बैंगन खाए जा रहा है और दल की लड़कियों में सबसे छोटी लड़की को यह नजर आया। उसने दूसरों को दिखाया और एक कुत्ते को उस बंदर के पीछे छोड़ दिया। कुत्ता दौड़कर उसे पकड़ने गया परन्तु बंदर को पकड़ नहीं पाया, उसके पहले ही बंदर पास के एक पेड़ पर चढ़ गया। बंदर को उस लड़की पर बहुत गुस्सा आया। उसने मन ही मन प्रतीज्ञा की कि वह इसका बदला अवश्य लेगा।

लड़कियां सब अपने-अपने कार्यों में लग गई। कोई बैंगन उठा रही थी, तो कोई कपास। वह कुत्ता भी उनके साथ इधर-उधर घूम रहा था।

दोपहर के समय उनका खाने का वक्त था। काम छोड़कर सभी एक दूसरे को बुलाने लगी, क्योंकि अब उन्हें नहाना भी था। वे अपना

'रिगनाई', 'रिया' (पहनने के वस्त्र) ऊपर रखकर, 'रितकु' (गमछा/तौलिया) पहनकर नदी में नहाने लगी।

उधर वह बंदर सब कुछ छिपकर देख रहा था। जब लड़कियां नहाने में व्यस्त थी, कुत्ता भी एक पेड़ के नीचे सो रहा था। मौका मिलते ही बंदर पेड़ से नीचे उतरा और उनके कपड़े लेकर फिर पेड़ पर चढ़ गया।

जब लड़कियां नहा चुकी और ऊपर आकर देखा तो उनके कपड़े वहां नहीं थे। क्या हुआ? कहां गये? कौन ले गया? यह सब कहती हुई वे अपने कपड़े ढूंढने लगी।

उसी समय पेड़ हिल उठा, उन्होंने ऊपर देखा तो, वह बंदर कपड़ों को लेकर बैठा था। अब क्या करें! कैसे उससे कपड़े मांगे, वे सब सोचने लगी। अब घर भी जाना था, देर हो चुकी थी।

उनमें से जो सबसे बडी लड़की थी, वही पहले बंदर से कपड़ा मांगेगी, ऐसा उन्होंने तय किया।

बड़ी लड़की पेड़ के नीचे जाकर, हाथ उठाकर विनती करने लगी, भैया मुझे मेरे कपड़े लौटा दो, इसके बदले में तुम्हे जितना बैंगन चाहिए, मैं देने को तैयार हूं। बंदर राजी हो गया। बंदर ने बैंगन लेकर, उसे उसका कपड़ा लौटा दिया।

यह देखकर दूसरी लड़की आई। उसने भी बंदर को बैंगन देकर उससे अपने कपड़े ले लिये। इस तरह देखते-देखते सात मे से छः लड़कियों ने बंदर को बैंगन देकर, उससे अपने कपड़े वापस ले लिए।

अब केवल वह छोटी लड़की बची थी। वह भी पेड़ के नीचे जाकर उसे बैंगन के बदले कपड़े देने के लिए बोली। उधर दूसरी

लडकियां घर की ओर चल पड़ी थी, उसे भी उनके साथ-साथ जाना था। वह जल्दी से कुछ बैंगन उठाकर बंदर के हाथ में देने गई, पर इस बार बंदर ने बैंगन नहीं, लड़की को ही पेड़ पर उठा ले गया। लड़की डर के मारे जोर-जोर से चिल्लाने लगी।

दूसरी लड़कियां उसकी आवाज सुनकर उस पेड़ के नीचे आई। उन्होंने बंदर से उसे छोड़ देने को कहा पर वह न माना। वे जल्दी से गांव की ओर चल दी ताकि घर में बता सकें और गांव के लोग मिलकर उस दुष्ट बंदर के हाथ से लड़की को बचा सकें। यह सोचकर लड़कियां घर लौट आई और सबको यह घटना बताई। परन्तु अब रात हो चुकी थी, फिर भी गांववाले उस पेड़ के नीचे आकर, उस लड़की को पुकारने लगे, पर कहीं उसका पता न चला। बंदर उसे लेकर घने जंगल के एक पेड़ पर ले गया और उसके साथ वहीं रहने लगा।

वक्त बीतता जा रहा था। लड़की न कुछ खाती थी, न पीती थी, वह केवल रोती रहती थी। भला कोई बंदर के साथ कैसे रह सकता था? पर वह कर भी क्या सकती थी। बंदर से छुटकारा पाना इतना आसान नहीं था। वह मजबूर होकर बंदर के साथ रहने लगी। बंदर ने उसके साथ ब्याह रचाया। पर लड़की उसे मन से पति न मान सकी। वह हर वक्त यहां से भागने का मौका ढूंढ रही थी।

साल बीत गया। बंदर के घर एक लड़का पैदा हुआ। जंगल में ही वह बड़ा होने लगा। अब बंदर भी थोड़ा निश्चिंत हुआ कि अब उसकी पत्नी भाग नहीं सकेगी।

कुछ दिनों के बाद लड़की ने बंदर से कहा कि वह फिर से मां बनने वाली है, इसलिए उसे खट्टा फल खाने का मन कर रहा है।

जिस पेड़ में बंदर अपने परिवार के साथ रहता था, उसके

आस-पास खट्टे फल का कोई भी पेड़ नहीं था। पर पत्नी ने कहा - अब उसे जैसे भी हो, जहां से भी हो, फल लाना ही होगा।

बंदर फल लाने दूर दूसरे जंगल में चला गया।

लड़की को मालूम था कि फल यहां नहीं मिलेगा। बंदर के जाते ही उसे भागने का मौका मिल गया। घर से निकलते समय पता नहीं क्यों उसकी आंखें भर आई। बंदर पर उसे दया आ रही थी। पर उसे तो जाना ही था।

घर के हर एक सामान को छूकर उसने, उनसे विदा ली। चावल की हांडी से कहा, ''तुम इसी तरह पकते रहना''। घर की पालतू बिल्ली से कहा, ''तुम इसी तरह म्याऊं-म्याऊं बुलाते रहना''। चारवोई रवक (एक प्रकार का बांस का पात्र जिसमें पानी रखते हैं) से कहा, ''तुम इसी तरह पानी देते रहना''।

इस तरह सबसे विदा लेकर अपने बच्चे के साथ गांव की ओर चल पड़ी।

शाम को बंदर घर लौट आया। पत्नी और बच्चे को न देखकर उन्हे ढूंढने लगा। घर का सब सामान जैसे का तैसा पड़ा हुआ है, चावल पक रहा है, बिल्ली म्याऊं-म्याऊं कर रही है, पर पत्नी और बच्चा कहीं नहीं हैं। वह चिल्लाकर उन्हें बुलाने लगा पर किसी ने जवाब नहीं दिया। पत्नी व बच्चे के न मिलने पर वह बहुत दु:खी था।

वह उनको ढूंढने निकल पड़ा और रास्ते में जो मिला उससे पूछता रहता। एक दिन वह एक खेत से गुजर रहा था। कुछ किसानों से उसने पूछा - उन्होंने उससे कहा ''कुछ दिन पहले हमने यहीं से लड़की को जाते हुए देखा था। उसके गोद में एक छोटा बच्चा भी था।

वह शायद उस गांव की तरफ गई है। शायद वही तुम्हारी पत्नी रही होगी।''

यह सुनकर बंदर बहुत खुश हुआ और कहा ''मैं प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारी फसल बहुत अच्छी हो और साल भर तुम्हारा खेत इसी तरह हरा-भरा रहे,'' यह कहकर वह गांव की ओर चल पड़ा।

जाते-जाते एक दिन वह अपनी ससुराल पहुंच ही गया। दूर से अपने पिता को देखकर उसका लड़का मां से कहने लगा, ''मां, मां देखो, मेरे पिता आ रहे हैं।'' मां ने लडके को डांटते हुए कहा, ''चुप रहो, यहां कहां से तुम्हारे पिता आएंगे? वह तो एक बंदर है।''

लड़का नहीं माना और दौड़कर बंदर के पास गया और उसकी गोद में बैठ गया। बंदर भी बहुत दिनों के बाद अपने बेटे से मिलकर बहुत खुश हुआ।

इधर लड़की के मां-बाप भी बाहर निकल आए। वे अपने जमाई को देखकर बहुत खुश हुए। जमाई राजा पहली बार ससुराल आया इसलिए उन्होंने उसका बहुत आदर-सत्कार किया।

गांव वाले, पड़ोसी सब उसे देखने आए। उस रात बहुत खाना-पीना हुआ। रात को खाना-पीना होने के बाद गांव वाले अपने-अपने घर चले गए। इधर जवाई राजा भी नशे में चूर था। लड़की ने उसे ऊपर टांग घर (बांस का ऊंचा बनाया हुआ घर) में ले गई।

नशे में चूर होने के कारण बिस्तर पर सुलाते ही बंदर सो गया। वह गहरी नींद में डूब गया। इधर लड़की की आंखों में नींद नहीं थी। वह सोच रही थी कि किस तरह हमेशा के लिए इस बंदर से छुटकारा मिले।

इस तरह के विचारों में वह मग्न थी, तभी उसकी आंख लग गयी। उसे सपने में सुनाई दिया कि "हे लड़की अगर तुम उसे सच्चे मन से प्यार करोगी और अपना पति स्वीकार करोगी, तो यह बंदर मनुष्य रूप धारण कर लेगा।"

अब लड़की ने उसे सच्चे मन से स्वीकार कर लिया। कुछ दिनों में बंदर जमाई सचमुच में मनुष्य रूप में आ गया।

फिर वे एक सुखी परिवार की तरह रहने लगे। ❐

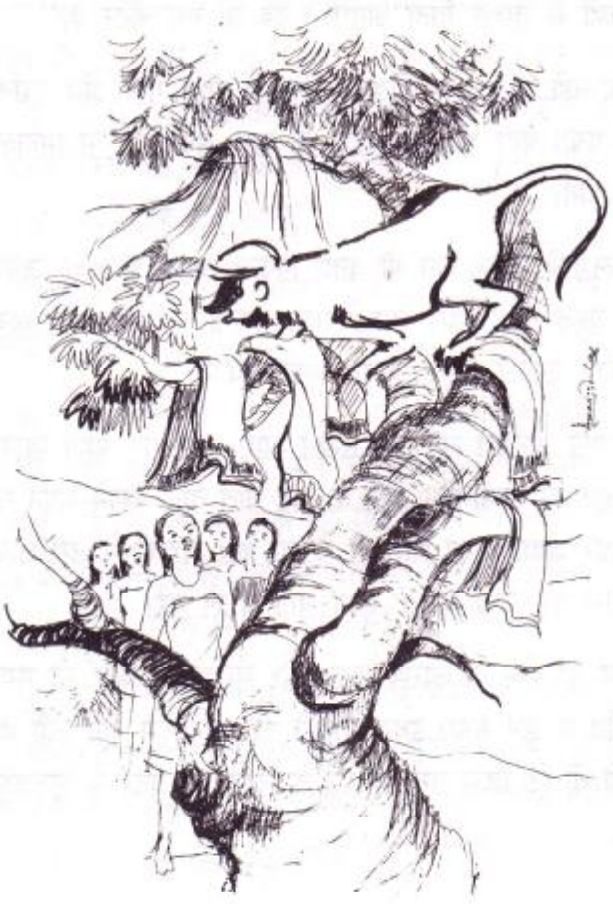

सखी डारलोंग

एक समय की बात है। गांव का नाम रहस्यबाड़ी और इसमें हरिचरण कोयले नाम का एक विदुर अकेला रहता था। एक दिन उसने एक हिरन का शिकार किया और घर आकर आधा सुरक्षित रख दिया और आधा खा लिया। उसके बाद वह झूम में चला गया।

जब हरिचरण झूम से लौटा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसका खाना पकाया हुआ है? परन्तु उसने तो किसी से भी नहीं कहा था कि उसका खाना बना देना।

अगले दिन हरिचरण यह देखने के लिए कि यह काम किसने किया, वह झूम न जाकर घर के पीछे चुपचाप छुपकर देखने लगा।

देखता क्या है? हिरन का आधा कटा शरीर एक सुन्दर लड़की के रूप में बदल गया और घर का काम करने लगी।

हरिचरण ने तुरन्त उसे पकड़ लिया और उससे प्रस्ताव किया कि - ''क्या तुम मेरी पत्नी बनना पसंद करोगी।''

सुन्दर लड़की ने जबाव दिया - ''एक शर्त पर कि कभी भी तुम मुझे 'सखी डारलोंग' (हिरन लड़की) नहीं पुकारोगे।''

हरिचरण ने वायदा किया कि वह कभी भी 'सखी डारलोंग' नहीं पुकारेगा, उसके बाद उनकी शादी हो गयी।

शादी के बाद उनके दो बच्चे हुये। एक दिन एक पार्टी में हरिचरण ने बहुत शराब पी मां ने बच्चों को कहा जावो-अपने पिता को वहां से ले आवो। बच्चों ने अपने पिता को बहुत कहा, चलो घर चलो। परन्तु हरिचरण नहीं आया।

मां ने एक बार फिर कोशिश की, और बच्चों से कहा जावो एक बार फिर अपने पिता को बुलाकर लावो। बच्चों ने बहुत कोशिश की कि ''पिता'' घर लौट आये।

इस पर हरिचरण क्रोधित हो गया और बच्चों से गुस्से में बोला तुम्हारी मां ''सखी डारलोंग'' है।

बच्चों ने आकर मां को बताया, इससे उनकी मां हिरन में बदल गयी और वापिस जंगल में चली गयी।

मां तो मां होती है। वह रोज चुपके से आकर अपने बच्चों को खाना खिलाकर चली जाती। यह किसी को पता न चलता।

हरिचरण ने दूसरी शादी कर ली। उसकी दूसरी पत्नी को इस बीच पता चला कि बच्चों को कोई हिरन आकर खाना खिला-पिला देती है। आखिर ऐसा कौन हो सकता है। उसने अपने पति को सारी बातें बतायी और जिद करी कि वह उस हिरन को मार डाले। हरिचरण ने ऐसा ही किया।

देखते ही देखते कटा हुआ हिरन एक पेड़ में बदल गया। कहते हैं, यही सेमल का पेड़ है, जो आज भी अपना फल व उससे प्राप्त होने वाली रुई मनुष्य को देकर उसकी सेवा कर रहा है। ❐

आलसी पुजारी

दस गांवों में अच्छा माना जाने वाला यह गांव। इसी गांव के एक घर में एक विधवा औरत अपने जवान बेटे के साथ रहती थी, जो उसकी आंखों का तारा और वंश का एकमात्र दीपक था।

वह बहुत ही आलसी होने के कारण काम करना तो दूर, घर से एक कदम भी नहीं निकलता था। उसके हम-उम्र, गांव के दूसरे लड़के सभी शादी-ब्याह करके अब संसारी हो चुके थे, परन्तु इसके भाग्य में विवाह कहां? कौन करेगा इससे शादी? यहीं चिंता उसकी मां को खाई जा रही थी।

इधर संसार में अभाव दिनों-दिन बढ़ता जा रहा था। विधवा पड़ोसी के झूम (खेत) में काम करके थोड़ा बहुत जो कुछ मिलता, उसी से वह संसार चलाती थी, पर ऐसा कितने दिन चलेगा? वह सोचती रहती।

एक दिन वह बेटे से बोली, "बेटा गांव के और लड़के भी तो काम करते हैं, अपने परिवार का पालन करते हैं, तुम भी तो कुछ कर सकते हो। आखिर कब तक मैं इस तरह तुम्हारा पेट भरती रहूंगी? जाओ, जाकर झूम काटो।"

यह सुनकर बेटे को बहुत गुस्सा आया, वह तुरंत एक चेम्पाई (डोला) लेकर खेत की ओर चल पड़ा और थोड़ी ही देर में वापस आ गया।

मां ने आश्चर्य से कहा, ''अरे अभी तो तुम निकले थे, इतनी जल्दी वापस आ गए? दूसरे लोग तो दिनभर काम करके भी झूम काटना समाप्त नहीं कर सकते हैं, और तुम्हारा काम अभी-अभी पूरा हो गया?

लड़के ने कहा, मां तुम चिंता न करो, जाकर देखो मैं एक अनोखा ''घिला'' (एक प्रकार की लता) काटकर खेत पर छोड आया हूं। मां यह सब सुनकर चुप हो गई।

कुछ दिनों बाद झूम में आग देने का समय आ गया। अब मां ने फिर से लड़के को याद दिलाते हुए कहा, ''गांव के सभी लोग अब झूम जला रहे हैं, तुम्हें भी जाना चाहिए।'' सुनते ही उसने कहा, ''मैं अभी जाता हूं मां।''

जाते समय मां अपने बेटे को सात झूमों की मिट्टी, सात तालाबों का पानी और सात मशाल देते हुए कहती है - ''आग जलाने से पहो ईसे दम्वी-देवताओं की वंदना करना और ख्याल रखना कि जंगल में दूसरों के बाल-बच्चों का कोई नुकसान न हो? इसलिए पहले से ही वंदना करते हुए यह कहना, किसी के बाल-बच्चे मारे जाने से मुझे अभिशाप नहीं देना, झूम जलाना हमारे पुरखों की रीति है। इसलिए यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने पूर्वजों की रीति का पालन करें।''

खेत में जाकर लड़के ने बिना पूजा अर्चना किये झूम में आग लगा दी और आग लगते ही वह लता व समूची झूम की घास जल उठी। देखते ही देखते पूरे जंगल में आग फैल गई।

इधर घर में मां पुराने नियमों के अनुसार जब तक झूम पूरा जल न जाए, तब तक एक पानी भरा हुआ घड़े को छलनी से ढक कर उसके ऊपर पंखा रखकर और बेटे का इन्तजार करने लगी।

उधर जंगल में नागराज के बच्चे रहते थे। वे सब आग में जलकर राख हो गए। नागराज उस समय घर पर नहीं था. बच्चों के लिए खाने के प्रबंध करने गया हुआ था। जब वह लौट आया तो बहुत देर हो चुकी थी, सब कुछ राख हो गया था। उसे बहुत दु:ख पहुंचा और क्रोध भी आया। इस कर्म की सजा देने के लिए वह उस लडके के घर गया और पूरे घर को सात कुंडली में बांधकर, आक्रोश के साथ उसकी प्रतीक्षा करने लगा।

घर के अंदर मां अकेली रह गई. गांव वाले सहायता करने, घर के पास तक न आ सके। झूम का काम समाप्त कर लड़का घर लौटा। उसके भीतर घुसने की कोशिश करते ही नागराज गरज उठा।

लड़का बहुत घबरा गया और बाहर से ही मां को पूछा कि अब वह क्या करे? उसे समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हुआ?

मां ने अंदर से जवाब दिया, मैंने तुम्हें देव-देवियों की वंदना करके आग जलाने को कहा था, मंत्र भी सीखा दिया था, परन्तु तुमने ऐसा नहीं किया, इसीलिए हमारे ऊपर ऐसी मुसीबत आ खड़ी हुई। अब जैसे मैं कहती हूं, वैसा ही करो। एक काला मुर्गा, एक बोतल शराब, कुछ हल्दी, एक कटारी और कुछ केले के पत्ते ले आओ और जंगल में जाकर "मामा-मामा पुकारो। तुम्हें जवाब मिलेगा और इसके बाद तुम्हें क्या करना है, मामा बता देगा। अब जल्दी जाओ।"

लडका जंगल में जाकर "मामा-मामा" पुकारने लगा। बहुत देर

इधर-उधर घुमाने के बाद अंत में उसे कहीं से एक आवाज सुनाई दी। वह चारों ओर देखने लगा और उसी ओर चल पड़ा, जहां से आवाज आ रही थी। वहां उसे एक बूढ़ा आदमी मिला। पास जाकर उसने पूछा, "क्या तुम्ही मेरे मामा हो?"

बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया "हां"।

अब लड़के ने उसे सब कुछ बताया और कहा कि उसकी मां की जान बहुत खतरे में है, मां ने ही मुझे यहां आपके पास भेजा है और कहा कि अब आप ही हमारी मदद कर सकते हैं, हमें बचा सकते हैं।"

बूढ़े ने कहा, "घबराओं नही, तुम्हें और तुम्हारी मां को कुछ नहीं होगा। मैं जैसा कहता हूं, वैसा करो। कोई तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा।"

लड़के ने बूढ़े द्वारा बताई गई विधि से पूजा की। बूढ़े ने मंत्र पढ़े। इससे उसके घर का घेरा लगाया हुआ नागराज भी सात टुकड़ों में कट गया।

बृद्ध ने लड़के को घर जाने के लिए कहा और हवा में विलीन हो गया। वह बृद्ध वास्तव में एक देवता थे, जिसे लोग "बूढ़े देवता" के रूप में जानते और मानते हैं।

बूढ़े देवता के अदृश्य हो जाने पर लड़का घर लौट आया और मां को सारी कहानी बताई, कि किस तरह उसे मामा ने बूढ़े देवता के रूप में दर्शन दिया और उन्होंने किस प्रकार उसकी सहायता की और उसे पूरा पूजा-पाठ मंत्र सिखाये।

बेटे ने मां से कहा, "मां यह तो हमारी पूजा का फल है कि

नागराज से हमे मुक्ति मिली, हम बच गए।

अब से अगर कोई बीमार पड़ जाए या किसी मुसीबत में पड़ जाए तो मैं पूजा-पाठ व मंत्रों के द्वारा उन्हें बचाऊंगा?

मा यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुई। उसने कहा, ''क्यों नहीं बेटा, अगर तुम्हारे मन में सच्ची भावना और भक्ति है और अगर तुम सच्चे दिल से चाहते हो तो जरूर दूसरों की मदद कर सकते हो।''

उसी दिन से गांव में बीमार पड़ने या संकट आने पर लोग ''बूढ़े देवता'' को याद करते और नियमानुसार उसकी पूजा करते हैं।

यह रीति आज भी प्रचलित है। पूजा करने वाले पुजारी को 'ढेंगा-अचाई' कहते हैं जिसका अर्थ है-आलसी पुजारी। ❐

बात न मानने की सजा

पुराने समय की बात है। एक राजा राज करता था। उसके महल में अनेक दासियां थीं। दासियां बहुत ही सुन्दर लड़कियां थी क्योंकि राजा के लोग गांव-गांव जाकर सुन्दर-सुन्दर लड़कियां ढूंढकर महल में ले आते और उन्हें दासी बना लेते थे। चाहे उनका घर-परिवार, पति बच्चे ही क्यों न हो, उन्हें सब कुछ छोडकर आंसू बहाते हुए राजमहल की दासी बनना पड़ता था। लड़की अगर कुवांरी होती तो और भी अच्छी बात थी।

उस समय हर सुन्दर युवती को एक ही डर था कि कहीं राजा के आदमी आकर उसे पकड़ न ले जाएं।

इसी राज्य के एक पहाड़ की गोद मे एक छोटा सा गांव था, जहां एक झूम किसान अपनी पत्नी और दो बेटियों के साथ रहता था। दोनों लड़कियां बहुत ही सुन्दर और सुशील थी। न केवल रूप रंग में, काम-काज में भी उनके समान पूरे गांव में दूसरा कोई नहीं था। दोनों रूप और गुण की भंडार थी। उन्हें देखने से ऐसा लगता था मानो धान और कपास की देवी धरती पर उतर आई हो।

देखते ही देखते किसान की दोनों बेटियां जवान हो गई। किसान

और उसकी पत्नी ने सोचा की किस तरह जल्दी से जल्दी उनका ब्याह रचाया जाए क्योंकि इन्हें घर पर अकेला छोड़ना भी एक गंभीर समस्या थी। क्या पता कब राजा के सिपाही उन्हें उठा ले जाएं।

देखते-देखते झूम काटने का मौसम आ गया। अब किसान और पत्नी को काम पर जाना था। वे सोचने लगे कि अपनी बेटियों को अकेले छोड़कर कैसे जाएंगे? अगर राजा के आदमियों को पता चल गया तो वे उन्हें नहीं छोडेंगे। वे उन्हें साथ भी नहीं ले जा सकते क्योंकि खेत में जाते हुए वे अगर किसी को नजर आ गयी तो राजा के कानों तक खबर पहुंचते देर नहीं लगेगी।

बहुत सोचने के बाद किसान को एक उपाय सूझा। उसने बेटियों से कहा, "तुम घर के एक कोने में चुपचाप बैठे रहना, ताकि किसी को मालूम न चले कि कोई अंदर है।" इस तरह लड़कियों को घर में छिपा कर किसान और उसकी पत्नी निश्चित होकर खेत की ओर चल पड़े।

वे थोड़ी ही दूर तक निकले होंगे कि - राजा के सिपाही गांव में आ गए। उधर उनकी आहट सुनकर घर के अन्दर दोनों बहनें डर के मारे बुरी तरह काँप रही थीं। चुप रहने के बजाय वे दोनों एक दूसरे को कहने लगी, "सुनो,सुनो, दुष्ट सिपाही शायद आ गए, बातें मत करों, कुछ भी न कहो, एकदम चुप रहो, नहीं तो वे हमें पकड़कर ले जायेंगे।

इस तरह, जब बड़ी बोलती, तो छोटी उसे चुप कराती और जब छोटी बोलती, तो बड़ी उसे चुप कराने लगती। इस प्रकार धीरे-धीरे उनकी आवाज बढ़ती गई।

तभी सिपाही उनके दरवाजे से गुजर रहे थे कि घर के अंदर से आवाज उनके कानों तक पहुंची। फिर क्या था, सिपाहियों ने घर में घुस कर दोनों को पकड़ लिया और राजमहल में ले जाकर उन्हें

दासी बना दिया।

उधर खेत से किसान और उसकी पत्नी घर लौट आए। घर में अंधेरा था और लड़कियां भी घर पर नहीं थी। अब तक लड़कियां राजा की दासी बन चुकी थी।

वे दोनों सब कुछ समझ गए, पर वे राजा के आगे कर भी क्या सकते थे। अपनी बेटियों के दु:ख से दुखी, वे कुछ समय के बाद ही संसार से चल बसे। बहुत सपने सजाए थे दोनों ने, परन्तु वे अपने सपनों को पूरा न कर सके।

उधर दोनों लड़कियां भी बहुत दु:खी थी। राजमहल का वैभव-विलास, चमक-दमक, कुछ भी उनके मन को बहला न सके। दोनों हमेशा अपने मां-बाप को याद करके रोती रहती थी। ऐसा लगता था मानों दो सुन्दर उन्मुक्त पंछी को पकड़कर पिंजड़ें में बंद कर दिया हो और इस तरह रोते-रोते दोनों बहनें भी एक दिन परलोक सिधार गयी।

अगले जन्म में दोनों बहनों ने पक्षी के रूप में जन्म लिया, परन्तु पक्षी होने के बावजूद उन्हें अपने पिछले जन्म के बारे में सब कुछ याद था, कि उस जन्म में बातें करने के अपराध में वे पकड़ी गयी थी और उन्होंने एक बहुत ही दर्दनाक जीवन व्यतीत किया था।

पक्षी रूप में भी वे आज मनुष्य से, बातें करते हुए अपनी दर्दनाक जीवन की करुण कहानी की याद दिलाते हुए कहती हैं कि-''अधिक बातें मत करो, हमेशा धीरे बोलो, कम बोलो और हमेशा बड़ों का कहना मानो।'' ❐

स्वर्ग का फूल

चैत्र का महीना खत्म हो चला था। बैसाख आ गया है। दो दिन बाद ही ''गरिया पूजा'' थी। ऐसे समय एक युवक अपनी ससुराल से अपनी दुल्हन को अपने घर ले जा रहा था। इस साल पहली बार वह अपनी पत्नी के साथ गावं में बिताएगा। इसीलिए उसका मन खुशी से झूम रहा था।

दोपहर के भोजन के बाद ही युवक अपनी पत्नी के साथ अपने गांव की ओर चल पड़ा। शाम होने से पहले ही वे अपने गांव पहुंचना चाहते थे।

जंगलों के बीच से जा रहे थे कि अचानक बहुत सुंदर फूल की एक खुशबू उसकी पत्नी को मिली और वो अपने पति से उस फूल का नाम पूछती है। पति बताता है कि उस फूल का नाम है 'रासना'।

पत्नी उस फूल को अपने बालों पर लगाना चाहती है, तो पति उसे बताता है कि यह देवताओं का फूल है। एक बार स्वर्ग की कोई अप्सरा पृथ्वी पर श्राप के कारण आई थी और उसे यह फूल बहुत पसंद था तो वह अपने साथ ले आई थी। यह फूल पृथ्वी की जलवायु-मिट्टी सह नहीं पाता इसलिए यह फूल दूसरे पेड़ों के ऊपर उगता है। इसका

मिट्टी से कोई मिलाव नहीं होता।

पति फिर बताता है कि, जो स्त्री यह फूल अपने बालों में लगाएगी उसका पति उल्लू बन जाता है''। उसकी पत्नी फिर भी फूल मांगती है। पति कहता है कि ''मैं ऊपर चढ़कर फूल फेंकता हूं, परन्तु बालों में मत लगाना, नही तो मैं उल्लू बन जाऊंगा।''

पत्नी को उसकी बातों का विश्वास नहीं होता और पेड़ से उसके फूल फेंकने के साथ ही साथ अपने बालों पर लगा लेती है।

फूल बालों में लगाते ही उसका पति उल्लू बन जाता है। यह देखकर वो चिल्लाती है और अपने बालों से फूल निकाल फेंक डालती है, परन्तु उसका पति वैसा ही उल्लू बना रह जाता है।

उल्लू रूपी पति, उसे अकेले ही गांव में जाने को कहता है। उसकी पत्नी वहीं पर सिर पटक-पटक कर, रोते-रोते प्राण गंवा देती है। कुछ समय बाद उसने 'गोधिका' के रूप में उसी वन में जन्म लिया।

आज भी बैसाख के महीने में 'रासना फूल' के खिलने पर पेड़ पर उल्लू अपने जीवन की व्यथा सुनाता है- ''हूलक हूते- हूलक हूते'' करके और यह आवाज सुनते ही 'गोधिका' बिल से निकल कर अपनी पूंछ हिलाती जाती है।

पति-पत्नी की यह करुण कथा देवताओं तक पहुंची और उन्होंने इस फूल की खूशबू वापिस ले ली ताकि ऐसी घटना भविष्य में और न घटे। ❐

(यही कारण है कि आज 'रासना फूल' में कोई सुगंध नहीं मिलती।)

चांद कुमार

पुराने दिनों की बात है। एक गांव में एक किसान अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसकी कोई संतान नहीं थी। किसान की एक बहन थी। गर्भवती बहन का पति एक दिन सांप के काटने से मर जाता है। प्रसव के बाद उसकी बहन भी मर जाती है। उसकी एक बेटी होती है और किसान उसे अपने पास रख लेता है और बहुत प्यार से पालता है। उसका नाम रखते हैं 'कूफू'।

कूफू भी मामा-मामी को माता-पिता कहती थी। वह बहुत ही रुपवती और गुणवती थी। अब वह शादी लायक हो गयी थी।

रोज चंद्रमा निकलने पर वो उस ओर देखती रहती थी। अचानक एक दिन चांद की ओर देखती है, तो चांद में से एक सुंदर नौजवान निकलता है। वो मन ही मन उससे प्यार करने लगती है।

बसंत ऋतु थी। सभी रात को सो रहे थे, कि **चांद** में से नवयुवक निकलकर कूफू के पास आता है और बताता है कि वो स्वयं चंद्रदेव है। इस तरह से चंद्रदेव रोज़ उसके पास रात को आने लगा।

अचानक कूफू गर्भवती सी दिखने लगी। उसकी मामी के पूछने

पर वो सब कुछ बता देती है। धीरे-धीरे यह बात गांव में भी फैल जाती है। इस बात को लेकर पंचायत बैठती है। पंचायत में कोई कूफू की बात पर विश्वास नहीं करते और उसे गांव से निकाल देते हैं।

कूफू गांव के बाहर अपने एक खेत में रहने लगती है। रात को चंद्रदेव आता था और उससे मिलता था। उसका एक बेटा होता है, परन्तु बेटा देखनें में इंसान की तरह नहीं बल्कि मेंढक की तरह होता है। फिर भी कूफू उसे पाकर बहुत खुश होती है। उसका नाम रखती है 'चांदकुमार'।

बेटा बड़ा होने लगा और वह बहुत बुद्धिमान था। वह अपनी मां से पिता के बारे में पूछता। मां कहती, "अगर तुम खुद ही अपने पिता को बुलाओ तो वे आ जाएंगे।"

एक दिन चांदकुमार बाजार जाने के लिए अकेले जिद करता है। कूफू बेटे के आगे हार मानकर राजी हो जाती है। चांदकुमार घर से कुछ दूर जाकर जंगलों में अपने पिता को बुलता है, चंद्रदेव प्रकट होते हैं। पुत्र अपने कष्ट की बात पिता से कहता है।

चंद्रदेव कहते है, "ऐसा भेष तुम्हारा किसी शाप के वजह से है, जिस दिन कोई लड़की तुमसे शादी कर लेगी, उसके बाद तुम इंसान बन जाओगे। तुम अभी कभी-कभी अपनी मर्जी से भी इंसान बन सकोगे परंतु कोई तुम्हें ऐसा करते देख न ले, ध्यान रखना। नहीं तो फिर कभी इंसान न बन सकोगे।

दूर राजमहल था। एक दिन चांदकुमार उस राजमहल में जाना चाहता है। मां मना करती, पर बेटे के जिद को देखकर अनुमति दे देती है। वह राजमहल की ओर चल पड़ता है। फिर कुछ दूर जाकर इंसान बनता है और राजमहल में जाता है। राजमहल में जाते ही अचानक

राजकुमारी के आमने-सामने हो जाता है। दोनों एक दूसरे के रूप से मोहित हो जाते हैं और एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं।

अब रोज ही चांदकुमार राजमहल में आकर राजकुमारी से मिलता है मेढ़क रूप से, कैसे शापमुक्त होगा यह भी राजकुमारी को बताता है।

राजकुमारी, चांदकुमार से शादी को राज़ी हो जाती है। राजा अपने मंत्री को चांद कुमार का घर-द्वार देखने भेजता है। चांद कुमार की मां उनका खूब आदर-सत्कार करती है। शादी की बात तय हो जाती है।

राजकुमारी की शादी में काफी लोग आए हुए थे। बैंड बाजे के साथ बाराती आते हैं, पर दुल्हे की जगह पर एक मेंढक बैठा होता है। यह देखकर राजा-रानी शर्म तथा गुस्से से दरवाजा बंद करके बैठ जाते हैं।

राजकुमारी खुश होकर मेंढक रूपी चांदकुमार से शादी करके अपने ससुराल आ जाती है।

अब दिन भर चांदकुमार मेंढक बनकर रहता और रात को इंसान बन जाता। एक दिन राजकुमारी छिप-छिपकर चांद कुमार का मेंढक का चमड़ा ढूंढ निकालती है और उसे जला देती। इससे चांदकुमार इंसान रूप में बदल जाता है। अपने चांदकुमार को इंसान के रूप में देखकर वह बहुत खुश होती है।

गांव के लोग भी चांदकुमार के इस रूप को देखकर खुश होते हैं।

राजा और रानी के कानों तक भी चांदकुमार के इंसानी रूप की

ख्याति पहुंचती है और वे भी अपने दामाद से मिलने आते हैं। राजा अपना राज्य चांदकुमार को सौंपकर उसे राजा बना देता है।

स्वयं चंद्रदेव भी उसे आशीर्वाद देने आते हैं और आशीर्वाद देकर उसे चंद्रवंशीय राजा के रूप में स्थापित करते हैं।

चांदकुमार के राजा होने के कुछ काल बाद राजा और रानी भगवान की तपस्या करने ''मनू'' नदी के किनारे ययाति पर्वत चले जाते हैं।

चांदकुमार अपनी प्रजा को संतान के रूप में देखने लगा। प्रजा उसे ''फा'' (पिता) कहते थे। उसी समय से चंद्रवंशीय राजाओं के नाम के साथ ''फा'' जोड़ दिया जाता है। ❐

(त्रिपुरा के पूर्व राजाओं के साथ भी ''फा'' जुड़ा रहता था।)

बधिर परिवार

राजा के कुछ खास आदमी एक बार एक गांव से गुजर रहे थे। उन्हें दूर के किसी एक गांव में जाना था। जाते-जाते वे रास्ता भूल गये। गांव के खेत में एक लड़की काम कर रही थी। उन्होंने उससे पूछा "अच्छा, जरा बताओ तो सही, उस गांव में जाने का रास्ता कहां से है?" वह लड़की बधिर थी, जिससे कुछ न सुन सकी। वह समझी शायद राजा के लोग उसके खेत की सीमा जानना चाह रहे हैं, वह बोली, "वो उधर तक हमारा खेत है, इसके बाद पड़ोसियों का खेत शुरू होता है।"

वे लोग बिना कुछ समझकर 'जो होगा देखा जाएगा' कहकर आगे चल पड़े।

उनके चले जाने के बाद लड़की दौड़ती हुई घर आई। वह बहुत खुश थी क्योंकि खुद राजा के आदमियों से आज उसने बातें की।

घर आकर उसने अपनी मां से कहा, "मां आज बड़ा गज़ब हो गया, मैं कितनी भाग्यशाली हूं कि मेरे साथ आज राजा के कुछ खास लोगों ने बातें की। उन्होंने मुझसे पूछा कि हमारे खेत की सीमा कहां तक है? मैंने तुरंत उन्हें सब कुछ बता दिया।"

लड़की की मां भी सुनती न थी। वह भी अपनी बेटी की बात समझ नहीं पाई। उसने समझा उन्होंने पड़ोसी की मुर्गी चुराई है, और यह सुनते ही वह गुस्से से लाल हो उठी। "क्या इतनी हिम्मत! हमें चोर ठहराते हैं? अच्छा अभी देखती हूं?" यह कहकर वह अपने पति के पास शिकायत करने गई। कहने लगी, "अजी सुनते हो, वे लोग कह रहे हैं कि हमने उनकी मुर्गी चुराई, जरा सोचो तो सही, इतनी हिम्मत!"

पति बेचारा भी बधिर था, वह भी कुछ नहीं सुनता था। उसने सुना कि उसकी पत्नी कह रही है कि उसका किसी दूसरे स्त्री के साथ उसका गहरा समबंध है।

वह आंगन में बैठकर अपनी पत्नी के लिए सुन्दर सा एक 'लांगा' (बांस की टोकरी) बना रहा था। यह सुनते ही उसे बहुत दुख पहुंचा और गुस्सा भी आया। सोचने लगा "मेरा कैसा दुर्भाग्य है! कितने प्यार से यह लांगा उसके लिए तैयार कर रहा था और वह मुझे गलत समझ रही है!" अच्छा! तो मैं भी अब इसे और नहीं बनाऊंगा, यह कहकर उसने उस लांगा के दो टुकड़े करके फेंक दिया।

अब घर में चारों ओर हंगामा मच गया। कोई किसी की बात न सुन पा रहे थे, न ही समझ पा रहे थे।

उनकी ऊंची आवाज सुनकर पड़ौसी दौड़ते हुए उनके घर आए "क्या हुआ? किस बात पर इतना झगड़ा हो रहा है?"

उन्होंने लड़की से पूछा। उसने कहा, "आज खेत में राजा के कुछ आदमियों ने आकर मुझे खेत के बारे में पूछा, मैंने उन्हें, कहां तक अपना खेत फैला हुआ है, पूरा बता दिया। यही बात मैंने मां को बताई, पता नहीं मां ने क्या सुना, वह जाकर पिताजी को बताई और तभी से

उनका झगड़ा शुरू हो गया और यह अभी तक चल रहा है।''

अब पड़ोसियों ने मां से पूछा, उसने बताया ''मेरी बेटी ने आकर मुझे बताया कि हमने किसी की मुर्गी चुराई है, यही बात मैंने अपने पति से कही, पता नहीं उन्हें क्या हुआ, मुझ पर गुस्सा दिखाने लगे हैं।''

इसके बाद उन्होंने उसके पति से पूछा, उसने कहा, ''देखो कितनी दु:ख की बात है, मैं कितने प्यार से उसके लिए एक बांस का लांगा बना रहा था, अचानक वह मुझसे आकर कहने लगी, किसी के साथ मेरा सम्बंध है और मैं उसी के लिए लांगा बना रहा हूं। अब तुम्ही बताओ, यह सुनकर भला किसे गुस्सा नहीं आएगा?''

अब पड़ोसियों को सारी बात समझ आई। वे समझ गए कि किसी की बात को न सुनने और समझने के कारण ही यह झमेला हुआ। तीनों अपनी-अपनी बात अपने ढंग से कह रहे थे। सब लोग खूब हंसे और फिर सारी बात उन्हें समझाई।

इस तरह अंत में गांव वालों ने मां-बाप और बेटी के झगड़े को निपटा दिया और आगे से इशारों में बात करने की हिदायत दे दी।

सच, भगवान कभी किसी के पूरे परिवार को इस तरह बधिर न बनाए, यही कामना करते हुए सब अपने-अपने घर चले गये। ❐

दो बहनों का प्यार

दो बहनें थी। दोनों में खूब प्यार था। अब दोनों की शादी हो चुकी थी। छोटी बहन बहुत खाते-पीते घर में ब्याही गई तथा पैसे वाली थी। परन्तु बड़ी बहन बहुत गरीब और दु:खी थी। वह जैसे-तैसे अपना गुजारा करती थी।

एक दिन बड़ी बहन, छोटी बहन के घर आयी, यह सोचकर कि शायद वह उसकी कुछ सहायता करेगी। छोटी बहन पैसे वाली तो थी पर उसका मन बिलकुल साफ नहीं था। उसके दिल में अपनी बड़ी बहन के लिए जरा सा भी दया न थी। उसने बड़ी बहन को थोड़ा सा चावल और थोड़ी सी सब्जी दी। ''लेकिन इसके बदले में कुछ काम भी करवाना होगा।'' छोटी ने सोचा।

छोटी बहन ने बड़ी से कहा, जरा मेरे बालों से जूं निकाल कर दो। बड़ी, छोटी के बाल देखने लगी पर जूं नहीं मिली। कंघी करते समय छोटी को अपने बाल से एक जूं मिल गया। वह मन ही मन सोचने लगी। ''दीदी ने मुझसे बेइमानी की, उसने मेरे बालों में जूं ठीक से नहीं देखी। मैंने उसे इतना कुछ दिया, पर उसने मेरा छोटा सा काम भी ठीक से नहीं किया। उसे बहुत गुस्सा आया। उसने बड़ी से चावल

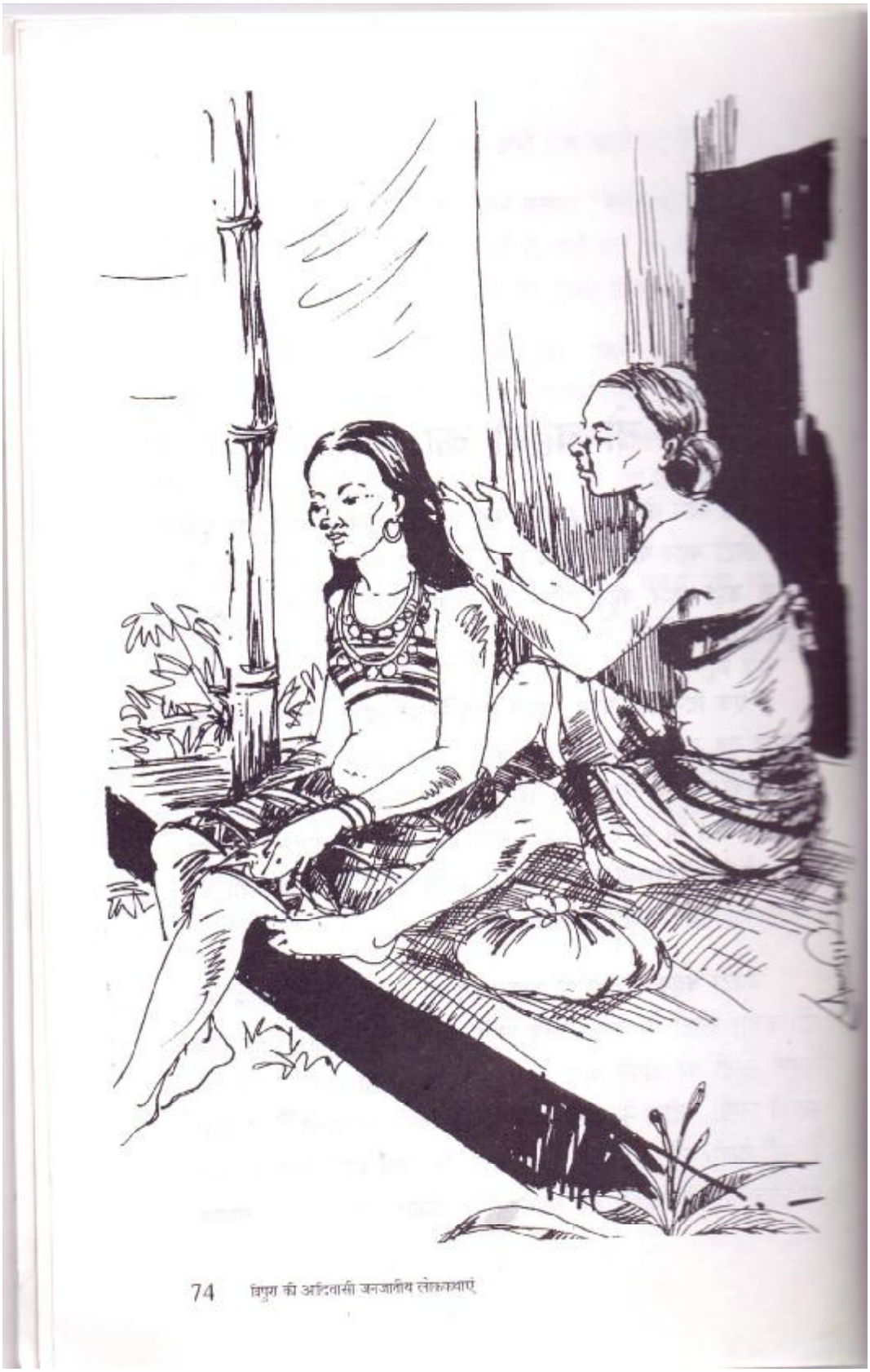

और सब्जी छीन लिया और उसे घर के पीछे के दरवाजे से बाहर निकाल दिया। बड़ी बहन और क्या करती, रोते-रोते घर वापस लौट आई।

जाते-जाते वह सोच रही थी कि अब मैं घर में बच्चों को क्या खिलाऊंगी, सोची थी छोटी बहन के घर से कुछ मिलेगा तो उसी से कुछ दिन गुजारा कर लूंगी, अब मैं क्या करूं? कहकर वह रोने लगी और रास्ते से कुछ जंगली साग-सब्जी लेकर घर लौटी। बच्चों ने भी दिनभर कुछ नहीं खाया था। वह साग-सब्जी को उबालने लगी और चूल्हे के पास ही लेटकर, सो गई।

नींद में उसने एक सपना देखा कि एक देवता उससे कह रहे हैं कि -''मैं तेरा दु:ख देखकर बहुत दु:खी हूं। उठ कर देख तेरी बची हुयी साग-सब्जी 'सोना' हो गया है।'' वह उठकर बैठ गई और देखा कि सचमुच सब कुछ सोना बन गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था। वह बहुत खुश हो गई।

सोना बेचकर थोड़ी ही दिनों में वह बहुत धनी हो गयी, परंतु छोटी बहन द्वारा किया गया अपमान को वह भूल नहीं पाई थी। भगवान की दया से उसके पास अब सब कुछ था।

एक दिन उसने छोटी बहन को अपने घर बुलाया। छोटी बहन आई। दोनों ने कुछ बातें की, खाया-पीया। छोटी बहन, बड़ी बहन की ऐसी उन्नति देखकर बहुत खुश हुई। जाते समय उसने भी बड़ी बहन को घर आने के लिए कहा। बड़ी फिर एक दिन छोटी के घर आई।

इस बार वह सोने के अलंकारों से लदी हुई, घोड़े गाड़ी पर चढ़कर आई। छोटी उसे आते देखकर ही सामने के दरवाजे में स्वागत करने के लिए खड़ी हो गई, परंतु बड़ी बहन सामने के दरवाजे से न

जाकर पीछे के दरवाजे से अंदर आयी। खाना खाने का समय हुआ। बड़ी बहन छोटी के साथ खाने बैठी। आज छोटी ने तरह-तरह के पकवान बनाए और बड़े प्यार से बड़ी को खाना परोसा, परंतु बड़ी बहन ने थोड़ा भी नहीं खाया और पीछे के दरवाजे से निकल गई।

छोटी बहन पीछे-पीछे गई। उसने पूछा, "क्या बात है दीदी, तुम क्या मुझसे नाराज हो? तुमने तो कुछ भी नहीं खाया।" जाते-जाते बड़ी बहन कहने लगी "पिछली बार जब मैं तुम्हारे घर आई थी, याद है तुमने मेरे साथ क्या व्यवहार किया था। किस तरह मुझे अपमानित किया था। कुछ भी खाने को नहीं दिया था, घर ले जाने के लिए जो कुछ दिया था, वह भी छीन लिया था। मेरे घर का अकल्याण होगा, इस इरादे से पीछे के दरवाजे से बाहर निकाल दिया था। तुमने ऐसा किया था- "क्योंकि मैं गरीब थी"।

आज मेरे पास सब कुछ है, इसलिए तुम प्यार जता रही हो। मेरे साथ इतना अच्छा व्यवहार कर रही हो। तुम्हें, तुम्हारे व्यवहार का अंतर समझाने के लिए ही मैंने आज कुछ नहीं खाया। दरअसल तुम मुझसे नहीं मेरे पैसों से, धन से, अलंकारों से प्यार करती हो। तुम मनुष्यों को नहीं, उसकी धनी अवस्था से प्यार करती हो।

यह कहकर बड़ी बहन अपनी घोड़ा गाड़ी में जा बैठी। छोटी बहन को सारी बात समझ में आ गई और भविष्य में उसने ऐसा न करने की कसम खाई और बड़ी बहन से क्षमा मांगी।

बड़ी बहन ने उसे माफ कर दिया। एक बार फिर बहनों में एक-दूसरे के लिए पहले जैसा प्यार उमड़ पड़ा। ❐

दिनेश कण्डवाल

जन्म : साइकिल वाड़ी पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखंड)

आत्मकथ्य: हिन्दी की कई पत्र-पत्रिकाओं में कभी-कभी, कुछ न कुछ छपता रहता है।

अब तक 'कादम्बिनी', 'धर्मयुग', 'संडे मेल', 'नंदन', 'बालहंस', 'स्वागत' में लेख-कहानियां प्रकाशित। ट्रेकिंग व फोटोग्राफी का शौक।

उपलब्धि: त्रिपुरा जैसे अहिन्दी प्रदेश से एक अनियतकालीन प्रथम हिन्दी सांस्कृतिक पत्रिका '**तीर्थमुख**' का प्रकाशन व संपादन।

रोटी का जुगाड़: ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कारपोरेशन लिमिटेड में कार्यरत।

स्थाई सम्पर्क : 43/4 विवेक विहार कालोनी जनरल महादेव सिंह रोड, फेज़-II, देहरादून-248 001

अगरतला : बी-95, ओ.एन.जी.सी. कालोनी, अगरतला पिन- 799 014 (त्रिपुरा)

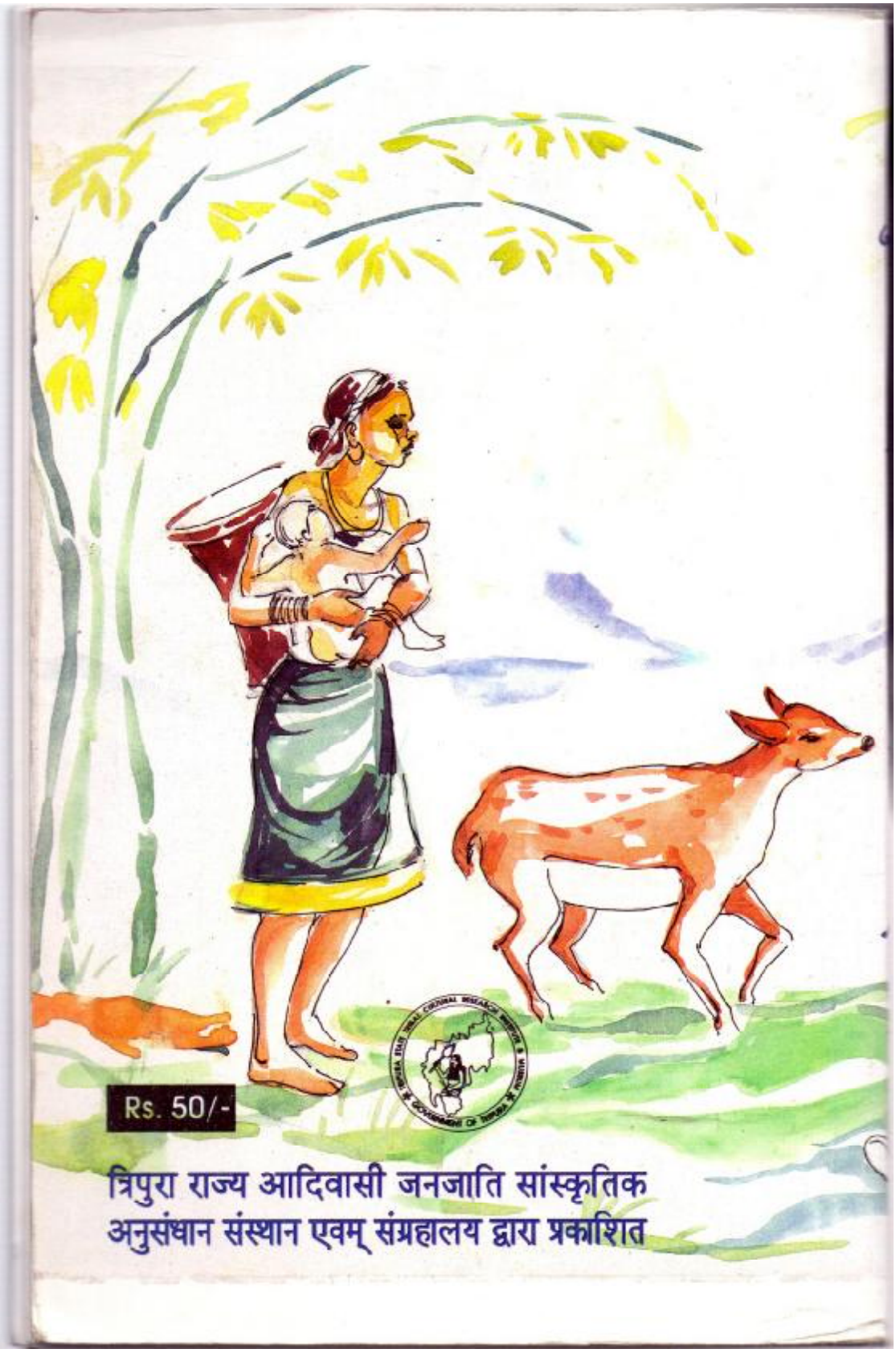

Rs. 50/-

त्रिपुरा राज्य आदिवासी जनजाति सांस्कृतिक
अनुसंधान संस्थान एवम् संग्रहालय द्वारा प्रकाशित